



अखिल भारत  
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

# साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 40 अंक-50

कल्पादि सम्वत् 1972949116

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 22 मार्च से 28 मार्च 2017 तक

चैत्र कृष्ण नवमी से चैत्र कृष्ण अमावस्या सम्वत् 2073 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

आतंकी  
मुखौटे के...

पृष्ठ- 3

अमृत औषधि  
दालचीनी...

पृष्ठ- 4

विक्रम सम्वत्  
के प्रवर्तक...

पृष्ठ- 5

इतिहास  
पुर्नलेखन....

पृष्ठ- 8

नाम से क्या  
लेना देना...

पृष्ठ- 12

## शुभकामनाएं

नवविक्रमी सम्वत् (2074)  
विश्वभर के हिन्दू समाज  
को कोटिशः मंगल  
कामनायें। नववर्ष आपके  
जीवन को हर्ष से  
आलोकित कर दें।

चन्द्रप्रकाश कौशिक  
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

मुन्ना कुमार शर्मा  
(राष्ट्रीय महासचिव)

वीरेश त्यागी  
(राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री)

## पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में हिंदू महिला की हत्या हिन्दू महासभा ने की निन्दा

● संवाददाता ●

पाकिस्तान के अशांत दक्षिण पश्चिम बलूचिस्तान प्रांत में अज्ञात लोगों के एक समूह ने एक हिंदू महिला पर हमला कर उसकी हत्या कर दी। डे न अखबार ने पुलिस के हवाले से बताया कि नसीराबाद जिले के बाबा कोट इलाके में अज्ञात लोगों के समूह ने जानिया कुमारी पर कल हमला किया। समूह के लोग उसकी हत्या करने के बाद फरार हो गये।

खबर के अनुसार हमले की वजह पता नहीं चल सकी। पुलिस ने हत्यारों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। जानिया कुमारी के भाई जालों राम ने कहा कि क्षेत्र के प्रभावशाली लोगों ने बिना किसी वजह के उसकी बहन की हत्या कर दी। उन्होंने पुलिस से हत्यारों के खिलाफ कार्रवाई करने और अपने परिवार को सुरक्षा प्रदान करने की

शेष पृष्ठ 10 पर



## दिल्ली पर आतंकी खतरा

केन्द्र सरकार आतंकवाद को समाप्त करें—हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

लखनऊ एनकाउंटर के बाद दिल्ली पुलिस ने राजधानी दिल्ली में भी अलर्ट जारी कर दिया है। जानकारी के मुताबिक खुरासान गुट के फरार दो आतंकियों के दिल्ली



की तरफ आने का संदेह जताया गया है, जिसके बाद संसद के आसपास सुरक्षा बढ़ा दी गई है। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश में भोपाल-उज्जैन पैसेंजर ट्रेन में हुए धमाके और फिर लखनऊ के ठाकुरगंज में आईएसआईएस संदिग्ध सैफुल्लाह के एनकाउंटर के बाद देश भर में सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट पर हैं। दिल्ली पुलिस ने भी राजधानी में अलर्ट जारी किया है। साथ ही नोएडा और गुडगांव की पुलिस को भी अलर्ट रहने की हिदायत दी गई है। इसके साथ ही दिल्ली पुलिस के सूत्रों की माने तो आतंकी संसद भवन को निशाना बना सकते हैं। इससे पहले लखनऊ एनकाउंटर के बीच यूपी, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात और एमपी में आईबी ने अलर्ट जारी किया है। साल 2009 में भारतीय संसद पर आतंकी हमला हुआ था। ये हमला जैश-ए-मोहम्मद ने अंजाम दिया था, जिसमें अफजल गुरु भी शामिल था और उसे फांसी दी गई। इसी के तहत दिल्ली के पहाड़गंज और आसपास के होटलों में भी जांच शुरू कर दी गई है। इस बीच बजट सत्र के दूसरे चरण को देखते हुए संसद के आसपास भी सुरक्षा बढ़ा दी गई है। संभव है कि इनके पास बड़ी मात्रा में विस्फोटक हो सकते हैं। शंका जताई जा रही है कि आईएसआईएस के खुरासान गुट के फरार दो आतंकी दिल्ली की तरफ भागे हैं, पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों को मौल और

शेष पृष्ठ 11 पर

## दुर्गा सप्तशती के गूढ़ रहस्य

भुवनेश्वरी संहिता में कहा गया है—जिस प्रकार से “वेद” अनादि है, उसी प्रकार “सप्तशती” भी अनादि है। श्री व्यास जी द्वारा रचित महापुराणों में “मार्कण्डेय पुराण” के माध्यम से मानव मात्र के कल्याण के लिए इसकी रचना की गई है। जिस प्रकार योग का सर्वोत्तम ग्रंथ गीता है उसी प्रकार “दुर्गा सप्तशती” शक्ति उपासना का श्रेष्ठ ग्रंथ है।

‘दुर्गा सप्तशती’ के सात सौ श्लोकों को तीन भागों प्रथम चरित्र (महाकाली), मध्यम चरित्र (महालक्ष्मी) तथा उत्तम चरित्र (महा सरस्वती) में विभाजित किया गया है। प्रत्येक चरित्र में सात-सात देवियों का स्तोत्र में उल्लेख मिलता है। प्रथम चरित्र में काली, तारा, छिन्नमस्ता, सुमुखी, भुवनेश्वरी, बाला, कुब्जा, द्वितीय चरित्र में लक्ष्मी, ललिता, काली, दुर्गा, गायत्री, अरुन्धती, सरस्वती तथा तृतीय चरित्र में ब्राह्म, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही तथा चामुंडा (शिवा) इस प्रकार कुल 29 देवियों के महात्म्य व प्रयोग इन तीन चरित्रों में दिए गये हैं। नन्दा, शाकम्भरी, भीमा ये तीन सप्तशती पाठ की महाशक्तियाँ तथा दुर्गा, रक्तदन्तिका व भ्रामरी को सप्तशती स्त्रोत का बीज कहा गया है। तंत्र में शक्ति के तीन रूप प्रतिमा, यंत्र तथा बीजाक्षर माने गए हैं। शक्ति की साधना हेतु इन तीनों रूपों का पद्धति अनुसार समन्वय आवश्यक माना जाता है।

‘दुर्गा सप्तशती’ के सात सौ श्लोकों का प्रयोग विवरण इस प्रकार है :

प्रयोगाणां तु नवति मारणे मोहनेऽत्र तु।  
उच्चाटे सतम्भने वापि प्रयोगाणां शतद्वयम्॥  
मध्यमेऽश चरित्रे स्यात्तृतीयेऽथ चरित्र के।  
विद्वेषवश्ययोश्चात्र प्रयोगरि ते मताः॥  
एवं सप्तशत चात्र प्रयोगाः संप्त-कीर्तिताः।  
तत्मात्सप्तशीत्मेव प्रोक्तं व्यासेन धीमता॥

अर्थात् इस सप्तशती में मारण के नब्बे, मोहन के नब्बे, उच्चाटन के दो सौ, स्तम्भन के दो सौ तथा वशीकरण और विद्वेषण के साठ प्रयोग दिए गए हैं। इस प्रकार यह कुल ७०० श्लोक ७०० प्रयोगों के समान माने गये हैं।

दुर्गा सप्तशती के अलग-अलग अध्यायों का अपना-अपना महत्त्व है जिनका यदि भक्तिभाव से पाठ किया जाए तो फल बड़ी जल्दी मिलता है, लेकिन लालच से किया पाठ फल नहीं देता। यदि किसी भी जातक को राहु, शनि, मंगल से बुरे फल मिल रहे हों तो ये अध्याय पूरी क्षमता रखते हैं उनके बुरे दोषों को दूर करने में। हर अध्याय का अपना एक महत्त्व है :

१. प्रथम अध्याय : हर प्रकार की चिंता मिटाने के लिए। मानसिक विकारों की वजह से आ रही अड़चनों को दूर करता है, मन को सही दिशा की ओर ले जाता है तथा जो चेतना खो गई है उसको एकत्र करता है।

२. द्वितीय अध्याय : मुकदमे, झगड़े आदि में विजय पाने के लिए यह पाठ काम करता है। लेकिन झूठा और आपने गलत किसी पर किया हो तो फल नहीं मिलता बल्कि आप खुद बुरा परिणाम भोगेंगे।

३. तृतीय अध्याय : शत्रु से छुटकारा पाने के लिए। शत्रु यदि बिना कारण बन रहे हैं और नुकसान का पता न चल रहा हो कि कौन कर रहा है तो यह पाठ उपयुक्त है।

४. चतुर्थ अध्याय : भक्ति, शक्ति तथा दर्शन के लिए। जो साधना से जुड़े होते व समाज हित में साधना को चेतना देना चाहते हैं तो यह पाठ फल देता है।

५. पंचम अध्याय : भक्ति, शक्ति तथा दर्शन के लिए। हर तरह से परेशान हो चुके लोग जो यह सोचते हैं कि हर मंदिर जाकर भी कुछ नहीं मिला, वे यह पाठ नियमित करें।

६. षष्ठम अध्याय : डर, शक, बाधा हटाने के लिए। राहु का अधिक खराब होना, केतु का पीड़ित होना, तंत्र, जादू, भूत इस तरह के डर पैदा करता है तो आप इस अध्याय का पाठ करें।

७. सप्तम अध्याय : हर कामना पूर्ण करने के लिए। सच्चे दिल से जो कामना आप करते हैं जिसमें किसी का अहित न हो तो यह अध्याय कारगर है।

८. अष्टम अध्याय : मिलाप व वशीकरण के लिए। वशीकरण गलत तरीके नहीं अपितु भलाई के लिए हो और कोई बिछड़ गया है तो यह असरकारी है।

९. नवम अध्याय : गुमशुदा की तलाश, हर प्रकार की कामना एवं पुत्र आदि के लिए। बहुत से लोग जो घर छोड़ देते हैं या खो जाते हैं, यह पाठ उसके लौटने का साधन बनता है।

१०. दशम अध्याय : गुमशुदा की तलाश, हर प्रकार की कामना एवं पुत्र आदि के लिए। अच्छे पुत्र की कामना रखने वाले या बच्चे गलत रास्ते पर चल रहे हों तो यह पाठ पूर्ण फलदायी है।

११. एकादश अध्याय : व्यापार व सुख-संपत्ति की प्राप्ति **शेष पृष्ठ 11 पर**

## साप्ताहिक राशिफल

**मेष** - इस समय जो लोग व्यवसाय में किसी भी प्रकार की साझेदारी करना चाहते हैं, उनके लिए समय अनुकूल है। भाग्य पक्ष मजबूत होने से किसी बड़ी हानि की संभावना टल जायेगी। दूरदर्शी सोच के साथ किये गये कार्य सफल होंगे। धार्मिक कार्यों का आयोजन या धार्मिक यात्रा का योग बन रहा है।

**वृष** - इस सप्ताह कुछ लोग अपनों के द्वारा सताये जा सकते हैं। नव-विवाहित जोड़ों को सन्तान लाभ की संभावना है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। घरेलू मामलों में तनाव प्रकट होगा और संतान की प्राप्ति संभव है। विद्यार्थी वर्ग इस समय सावधानी बरतें।

**मिथुन** - इस सप्ताह कुछ कार्यों को लेकर मन चिन्ताग्रस्त रह सकता है। लग्जीरियस चीजों से लाभ होने की संभावना है। मामा पक्ष से सहयोग मिलने की संभावना है। क्रोध पर नियंत्रण रखें। नवयुवकों के कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी। समय के दुरुपयोग से बचना होगा। परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा।

**कर्क** - इस सप्ताह कुछ लोगों को आलस्य सतायेगा किन्तु आलस्य पर काबू पाकर ही आप-अपने मकसद में कामयाब हो सकते हैं। ऑफिस के कार्यों को टालने का प्रयास न करें अन्यथा बॉस की नजर में आपकी छवि खराब हो सकती है। अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

**सिंह** - इस सप्ताह कुछ नया करने का मन होगा लेकिन समय की कमी और व्यस्तता के कारण मन को मारकर बैठना होगा। परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। जो लोग साझे या सहयोग से कार्य कर रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

**कन्या** - इस सप्ताह लम्बे समय से रुके हुये कार्यों में प्रगति होगी। योजनाओं को मूर्त रूप देने में बाधाएँ आयेंगी किन्तु निरन्तर प्रयास के आगे बाधाओं को भी हार मानना होगा। धार्मिक यात्रा के प्रबल योग हैं। धार्मिक आडम्बरों से बचें। अपनी वाणी पर नियन्त्रण पर रखें एवं अपने व्यवहार में सामंजस्य बनायें रखें।

**तुला** - इस सप्ताह कार्य व्यापार में वृद्धि व लगभग सभी तरह के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। भविष्य की योजनाएं बहुत सूझबूझ कर बनानी होगी। किसी मित्र व रिश्तेदार के कारण तनाव हो सकता है। सन्तान की ओर से सुखद समाचार मिलने का संकेत है।

**वृश्चिक** - इस सप्ताह भौतिक संसाधनों पर अत्यधिक व्यय रहेगा जिससे आप थोड़ा सा चिन्तित रह सकते हैं। व्यवसायी वर्ग के लिए धन का निवेश करना इस समय उचित नहीं है। मित्रों को शत्रु न बनाये अन्यथा धन की हानि होने की संभावना है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होंगे।

**धनु** - कार्य व्यापार में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति में मजबूत आयेगी। जो लोग नौकरी करते हैं उनके लिए कुछ अच्छे लाभ के योग बनते हैं। छोटी मोटी यात्राएं भी हो सकती हैं। पद प्रतिष्ठा आदि का लाभ होगा। व्यापारी वर्ग को अच्छे लाभ के योग है। उत्साह में वृद्धि होगी।

**मकर** - इस सप्ताह आपके मन में कुछ ऐसे विचार आयेंगे जिससे कि आप कुछ बड़ा परिवर्तन करने को लालयित रहेंगे। संसाधनों का सदुपयोग करके आप-अपने समय की बचत करके बहुत कुछ कर सकते हैं। इस समय आपके शत्रुओं की संख्या में भी बढ़ोतरी होगी।

**कुम्भ** - इस सप्ताह कुछ लोगों के नये कार्यों में रुकावट पैदा हो सकती है। अतः आप इस समय नये कार्य को शुरू न करें। मित्र या रिश्तेदार के कारण आपको हानि हो सकती है।

**मीन** - इस सप्ताह कुछ लोगों को सरकारी मामलों में सावधान रहने की आवश्यकता है। जो लोग वी.पी. शूगर के मरीज हैं वो अपने आहार पर विशेष ध्यान दें। आपके उत्साह में वृद्धि होगी और कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रदर्शन करेंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

## श्रीमद्भगवत गीता

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।

अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः॥

मेरी उत्पत्ति को अर्थात् लीला से प्रकट होने को न देवतालोग जानते हैं और न महर्षिजन को जानते हैं, क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं का और महर्षियों का भी आदिकारण हूँ॥२॥

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।

असम्मूढ य मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

जो मुझ को अजन्मा अर्थात् वास्तव में जन्मरहित, अनादि और लोकों का महान् ईश्वर तत्त्व से जानता है, वह मनुष्यों में ज्ञानवान् पुरुष सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है॥३॥

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः।

सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च॥

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः।

भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः॥

निश्चय करने की शक्ति, यर्थाथ ज्ञान, असम्मूढता, क्षमा, सत्य, इन्द्रियों का वश में करना, मनका निग्रह तथा सुख-दुःख, उत्पत्ति-प्रलय और भय-अभय तथा अहिंसा, समता, सन्तोष, तप, दान, कीर्ति और अपकीर्ति—ऐसे ये प्राणियों के नाना प्रकार के भाव मुझ से ही होते हैं॥४-५॥

अध्यक्षीय

## अहितकारी कानून

पूरी दुनिया में लड़कियों की स्थिति बेहतर करने के लिए, उनके शोषण को रोकने के लिए सरकारें बाल विवाह को रोकने के कानून बना रही हैं और सख्ती से उन पर अमल भी कर रही हैं। लेकिन बांग्लादेश ने अब ऐसा कानून बना दिया है, जो उसे लड़कियों के अधिकार और रक्षा के मामले में पीछे धकेल देगा। बांग्लादेश की संसद ने बाल विवाह से जुड़े कानून को मंजूरी दे दी। नए कानून में सामान्य तौर पर पुरुषों के लिए शादी की न्यूनतम आयु 21 और लड़कियों की 18 वर्ष ही रखी गई है। लेकिन लड़की के प्रेमी संग भाग जाने, दुष्कर्म या अवैध संबंधों के कारण संतान के जन्म लेने जैसी विशेष परिस्थितियों का हवाला देते हुए इसमें छूट दी गई है और इसका अर्थ यह है कि अभिभावकों की सहमति की शर्त पर 18 साल की लड़कियों के विवाह को कानूनी मंजूरी मिलेगी। इस नए कानून के खिलाफ मानवाधिकार संगठनों ने मंगलवार को प्रदर्शन किया। मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि बाल विवाह की रोकथाम और महिलाओं-बच्चों के स्वास्थ्य के मामले में बांग्लादेश ने पिछले कुछ सालों में जो प्रगति की है, वह इस कानून से ध्वस्त हो जाएगी। चाइल्ड राइट्स एडवोकेसी ग्रुप के नूर खान ने कहा कि विशेष परिस्थितियों के मामले में शादी की कोई न्यूनतम आयु तय नहीं की गई है। इससे 18-19 साल की लड़कियों की शादियां आम हो जाएंगी। कम उम्र में शादी, शारीरिक शोषण पूरी दुनिया के बच्चों के लिए खतरा है और इसलिए समय-समय पर इसके खिलाफ आवाज उठाई जाती रही है। यूनीसेफ ने भी



### राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक  
राष्ट्रीय अध्यक्ष

दिशा निर्देश जारी कभी सामाजिक आड़ में, कभी परिस्थितियों की कभी शारीरिक-का हवाला देकर के साथ खिलवाड़ किया जाता रहा है। आज के बच्चे बेशक पहले की पीढ़ियों की तुलना में जल्दी परिपक्व हो रहे हैं, उन तक सूचनाएं भी अधिक तीव्र गति से पहुंच रही हैं, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि बाल विवाह की ओर लौटा जाए। बांग्लादेश में बालविवाह पहले से एक गंभीर समस्या रही है। यूनीसेफ द्वारा 2016 में किए गए एक अध्ययन के मुताबिक वहां 15 साल से कम आयु में होने वाले विवाह 12 प्रतिशत हैं, जबकि 18 साल से कम आयु में होने वाले विवाह 51 प्रतिशत हैं। इधर पाकिस्तान में यह दर क्रमशः 3 और 29 प्रतिशत है, जबकि भारत में 15 साल से कम आयु में होने वाले विवाह 12 प्रतिशत और 18 साल से कम आयु में होने वाले विवाह 89 प्रतिशत हैं। बाल विवाह के मामले में विश्व में 99वां स्थान मलावी का आता है, जहां 15 और 18 की आयु से कम में होने वाले विवाह की दर क्रमशः 6 और 86 प्रतिशत है। लेकिन मलावी ने बच्चों के जीवन के साथ होने वाले इस खिलवाड़ को रोकने के लिए अपने संविधान से वह प्रावधान ही हटा लिया, जिसके तहत अबोध आयु के बच्चे अपने अभिभावकों की मर्जी से विवाह कर सकते थे। इस सख्ती से उसे बालविवाह की दर कम करने में मदद मिलेगी। लेकिन बांग्लादेश ने जो विपरीत कदम उठाया है, उसका उसे नुकसान झेलना पड़ेगा। 2005 में बालविवाह के मामले में बांग्लादेश का स्थान विश्व में चौथा था, जिसे बड़े प्रयासों के बाद 2016 में आठवें स्थान पर लाया गया। पर अब जिन विशेष परिस्थितियों का हवाला देते हुए विवाह का नया कानून बना है, उसमें लड़कियों की दुर्दशा के खतरे पहले से अधिक हो जाएंगे। जिस व्यक्ति ने दुष्कर्म किया है, उसके साथ विवाह करवाना लड़की को आजीवन सजा देने जैसा है। उसे जो मानसिक संताप होगा, इस बारे में संवेदनशीलता के साथ सोचने की जरूरत है। समाज में परिवार का सम्मान बनाए रखने के लिए लड़की के साथ ऐसा व्यवहार अनुचित होगा। इससे बलात्कार जैसी प्रवृत्ति को बल मिलेगा। बाल तस्करी, वेश्यावृत्ति आदि अपराधों में बढ़ोत्तरी की आशंका बनी रहेगी। विवाह अभिभावक की मर्जी से हो या लड़की की इच्छा से 18 साल की आयु शारीरिक और मानसिक दोनों ही तौर पर विवाह के लिए सही नहीं है। इस कानून से दहेज आदि की मांग कम होने का भी हवाला दिया जा रहा है। पर यह विचारणीय है कि विवाह के वक्त दहेज न लेकर अगर लड़की को उसका पति बाद में प्रताड़ित करता है, उसे घर से निकालता है या दहेज लाने की धमकी देता है। तब उस लड़की का भविष्य क्या होगा, 18 साल में विवाह की मंजूरी से लड़की के पढ़ने और आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने की संभावनाएं भी खत्म होंगी। मध्ययुग की ओर लौटाने वाले इस कानून पर बांग्लादेश को पुनर्विचार करना चाहिए।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

## आतंकी मुखौटे के पीछे कौन

भारत पिछले आठ सालों से लगातार कह रहा है कि मुंबई पर 26 नवंबर को हुए आतंकी हमले में पाकिस्तान का हाथ है, अब उसी बात की पुष्टि पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार महमूद अली दुरानी ने सार्वजनिक तौर पर की है। 96वीं एशियाई सुरक्षा कांग्रेस में श्री दुरानी ने बताया कि 26/11 मुंबई हमला सीमा पार आतंकवाद का क्लासिक उदाहरण है। इसके अलावा हाफिज सईद पर दुरानी ने कहा कि उसकी कोई उपयोगिता नहीं है। उसके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। मुंबई हमलों में अजमल कसाब एकमात्र आतंकवादी था, जिसे जिंदा पकड़ा गया था। उससे पूछताछ में यही साबित हुआ था कि पूरा हमला सीमापार से प्रायोजित और नियोजित था। इसके बाद अमरीका में कैद डेविड कोलमैन हेडली ने भी इसी आशय का बयान वीडियो कांग्रेस से पूछताछ में दिया था। और अब महमूद अली दुरानी का भारत में ही दिया गया यह बयान पाकिस्तान के खिलाफ तीसरा बड़ा सबूत है। यूं तो भारत ने हमेशा पुख्ता प्रमाणों के साथ अपनी पाकिस्तान ने कभी पकड़ने या उन कोई दिलचस्पी खत्म होने के खतरे ने आतंकवाद से



### राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा  
राष्ट्रीय महासचिव

मिलकर लड़ने की प्रतिबद्धता निभाने में ईमानदारी नहीं दिखाई। नतीजा यह हुआ कि दोनों देशों के बीच अविश्वास की कड़वाहट बढ़ती गई। हालांकि पाकिस्तान खुद लगातार आतंकवाद का शिकार हो रहा है। दुनिया में उसकी साख इस वजह से गिर चुकी है। लेकिन फिर भी सेना और आईएसआई के दबाव में वहां की सरकार स्वतंत्र निर्णय नहीं ले पा रही। पिछले दिनों मुंबई हमलों के साजिशकर्ता हाफिज सईद को उसने नजरबंद किया है, लेकिन इसके पीछे भी उसका स्वार्थ नजर आ रहा है। और जैसा कि दुरानी ने कहा कि हाफिज सईद की कोई उपयोगिता नहीं है, उससे जाहिर है कि जैसा कभी ओसामा बिन लादेन अमरीका के लिए उपयोगी था, वैसे ही सईद पाकिस्तान के लिए रहा होगा। उपयोगिता खत्म होने पर ओसामा बिन लादेन को मार दिया गया, जबकि हाफिज सईद का भविष्य अभी पाकिस्तान के हाथों है। महमूद अली दुरानी 11 मई 2002 से 10 जनवरी 2006 तक पाकिस्तान के एनएसए थे, यानी यह वही समय था जब मुंबई पर हमला हुआ और उसके बाद दोनों देशों के बीच संबंध खत्म होने की कगार पर पहुंच गए। एनएसए अपने देश में चल रही गतिविधियों से अनजान हो, ऐसा तो मुमकिन नहीं लगता। फिर उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत का साथ क्यों नहीं दिया, जो बात उन्होंने अब स्वीकार की है, उसके लिए भारत से सबूत मांगे जा रहे थे। तब वे चुप क्यों थे और अब ऐसा क्या हो गया है कि उन्होंने अपने देश के लिए इतनी बड़ी बात कह दी है। क्या यह सब किसी रणनीति के तहत हो रहा है या अचानक उन्हें कुछ आत्मज्ञान जैसा प्राप्त हुआ है जिसके कारण वे सच बोल रहे हैं क्या उनका बयान पाकिस्तान की आधिकारिक स्वीकारोक्ति मानी जाएगी या पाकिस्तान इसे दुरानी का निजी बयान कहकर पल्ला झाड़ सकता है, दुरानी सेवानिवृत्त हैं। तो क्या उनका यह बयान अधिक तौर पर दर्ज होगा या अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसकी कोई उपयोगिता ही नहीं होगी, ऐसे कई सवाल हैं, जिस पर भारत को विचार करने की जरूरत है। कसाब को तो सजा ए मौत दे दी गई, लेकिन वह इस पूरे खेल का एक मोहरा ही था। असल चालें जो चल रहे हैं, वो आतंकवादी अब भी सजा से बचे हुए हैं और भारत समेत दुनिया के तमाम आतंक पीड़ित देशों के लिए यह बड़ी चिंता का विषय है। एक वक्त था जब ओसामा बिन लादेन आतंकवाद का सबसे बड़ा चेहरा था। वो समुद्र की अतल गहराइयों में दफन हो गया लेकिन आतंकवाद पहले से कहीं भयावह रूप में दुनिया को डरा रहा है। महमूद अली दुरानी का बयान इस बात की पुष्टि करता है कि आतंकवाद महज आतंकवादी कहलाने वाले लोगों की देन नहीं है, इसमें निर्वाचित सरकारें, प्रशासन, सेना सब कहीं न कहीं भागीदार होते हैं। अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए आतंकवाद का खेल दुनिया में रचने वाले कब, किस मुखौटे में छिपे हैं, इसे पहचानना ही आज की सबसे बड़ी चुनौती है।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

## विविध रोगों में अलग-अलग तेलों के लाभ

ललित मैनी

**तेल** को धूप में रखकर उसमें सूर्य-किरणों का प्रभाव लाया जा सकता है। जिस रंग में तेल तैयार करना चाहें उस रंग की साफ काँच की बोतल में तीन भाग तक तेल भर दें व एक भाग खाली रखकर ढक्कन लगा दें और ऐसी जगह रखें जहाँ दिनभर उस पर धूप पड़ती रहे। बोतल को लकड़ी के पट्टियों पर रखें एवं इसे रोज हिलाते रहें। धूप समाप्त होने से पहले ही बोतल उठाकर रख लें। बोतल को कम-से-कम 80 दिन तक धूप में रखें, उसके बाद ही उस तेल का मालिश हेतु प्रयोग करें। तेल जिस रंग की बोतल में भरकर धूप में रखा गया हो, उसी रंग वाली बोतल में रखा रहने दें। यदि किसी रंग की शुद्ध बोतल न मिल सके तो पारदर्शी काँच की बोतल पर इच्छित रंग का सेलोफेन कागज लपेटकर भी काम चलाया जा सकता है।

ऋतु और शरीर की स्थिति के अनुसार तेल का चुनाव कर नियमित रूप से शरीर की मालिश करनी चाहिए। साधारण मालिश

के लिए सरसों, नारियल व तिल का तेल उत्तम रहता है। कमजोर रोगियों के लिए जैतून का तेल विशेष लाभ देता है। कमर व गर्दन का दर्द, मोच, लकवा, जोड़ों का दर्द, गठिया, वातव्याधि, सायटिका आदि रोगों में लाल रंग की बोतल वाले नारियल या तिल के तेल से मालिश करें तथा 20 से 60 मिनट तक रोगग्रस्त अंग की धूप में सिंकाई करें। यह तेल बहुत ही गर्म प्रकृति का हो जाता है। जहाँ शरीर में गर्मी और चेतना देने की आवश्यकता हो, वहाँ इस तेल से मालिश करनी चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में गर्म प्रकृति के लोगों के लिए इसका उपयोग हितावह नहीं है।

हलके नीले या नीले रंग की बोतल में सरसों या नारियल का तेल तैयार करने से वह ठंडी प्रकृति का हो जाता है। शरीर में बढ़ी हुई गर्मी, गर्मी के दाने, कील-मुंहासे, घमौरियाँ, बवासीर, स्नायविक संस्थान के दौर्बल्य, शिथिलता, सिरदर्द, बाल झड़ना, रूसी होना आदि में यह

लाभदायक है। यह मस्तिष्क को ठंडक देता है, दिमागी कार्य करने वालों के लिए यह टॉनिक का काम करता है।

चर्मरोग, खुजली आदि के लिए अलसी का तेल या हरे रंग की बोतल वाला नारियल का तेल लाभप्रद होता है। यह नारियल तेल लघु मस्तिष्क पर (सिर के पीछे, नीचे) लगाने से स्वप्नदोष, सूजाक (गोनोरिया), प्रदर रोग आदि में शीघ्र लाभ होता है। सिर में खुजली, असमय सफेद बाल, उपदंश (Syphilis) आदि में भी यह उपयोगी है। सिरदर्द के लिए बादाम के तेल का प्रयोग करें। कमजोर और सूखा रोग से ग्रस्त बच्चों के शरीर पर धूप में बैठकर जैतून के तेल से मालिश करना बहुत गुणकारी होता है। वात आदि व्याधियों में तिल का तेल लाभकारी है। आश्रम-निर्मित मालिश तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अंदरूनी चोट, पैर में मोच आना आदि में हलके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है।

दालचीनी उष्ण, पाचक, स्फूर्तिदायक, रक्तशोधक, वीर्यवर्धक व मूत्रल है। यह वायु व कफ का शमन कर उनसे उत्पन्न होने वाले अनेक रोगों को दूर करती है। यह श्वेत रक्तकणों की वृद्धि कर रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाती है। बवासीर, कृमि, खुजली, राजयक्ष्मा (टी.बी.), इन्फ्लूएंजा (एक प्रकार का शीतप्रधान संक्रामक ज्वर), मूत्राशय के रोग, टायफाइड, हृदय रोग, कैंसर, पेट के रोग आदि में यह लाभकारी है। संक्रामक बीमारियों की यह विशेष औषधि है।

**दालचीनी के कुछ प्रयोग**

❖ **पेट के रोग व सर्दी-खाँसी :** 9 ग्राम (एक चने जितनी मात्रा) दालचीनी चूर्ण में 9 चम्मच शहद मिलाकर दिन में 9-12 बार चाटने से मंदाग्नि, अजीर्ण, पेट की वायु, संग्रहणी रोग, अफरा और सर्दी-खाँसी

## अमृत औषधि दालचीनी

में लाभ होता है।

❖ **हृदय रोग :** एक ग्राम दालचीनी चूर्ण 200 मि.ली. पानी में धीमा आँच पर उबालें। 900 मि.ली. पानी शेष रहने पर उसे छानकर पी लें। इसे रोज सुबह लेने से कोलेस्ट्रॉल की अतिरिक्त मात्रा घटती है। गर्म प्रकृति वाले लोग एवं ग्रीष्म ऋतु में इसके पानी में दूध मिलाकर उपयोग कर सकते हैं। इस प्रयोग से रक्त की शुद्धि होती है एवं हृदय को बल मिलता है।

❖ **स्वरभंग, खाँसी व मुँह की बदबू :** दालचीनी का छोटा-सा टुकड़ा चूसने से स्वरभंग (गला बैठना) की विकृति नष्ट होती है व आवाज खुलती है। इससे खाँसी का प्रकोप शांत होता है, मुँह की बदबू दूर होती है, मसूड़े मजबूत बनते हैं और तोतलेपन में भी लाभ होता है।



**एलोवेरा** जेल बहुत ही

लाभदायक है। इसके मॉश्चराइजिंग, सॉफ्टनिंग और हीलिंग एक्शन त्वचा पर एक सुरक्षा परत के रूप में कार्य करते हैं। एक बढ़िया स्किन हाईड्रेटिंग टॉनिक होने के कारण एलोवेरा त्वचा में खोई नमी को लौटाता है, जिससे सन डैमेज के कारण आए काले निशान में बहुत फायदा पहुँचता है। इतना ही नहीं, सनबर्न के कारण आई सूजन और दर्द में भी एलोवेरा जेल का प्रयोग निजात दिलाता है।

❖ एलोवेरा में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटीएजिंग और स्किन को टाइट करने के गुण फेस पर अर्ली एजिंग के निशान नजर नहीं आने देते। साथ ही इसके भीतर मौजूद विटामिन सी और ई स्किन की नेचुरल फर्मनेस को इम्प्रूव करते हैं।

❖ गर्मी व बारिश के मौसम में पसीना ज्यादा आने के कारण स्किन में मॉश्चर की कमी हो जाती है। इसके लिए त्वचा पर सुबह-शाम एलोवेरा जेल लगाएँ। यह स्किन में नमी की कमी को पूरा करेगा। साथ ही फेयरनेस भी लाएगा।

❖ चेहरे के कील-मुंहासे व दाग-धब्बों को कम करने के लिए सूखी क्रश की हुई नीम की पत्तियों में थोड़ी सी मुलतानी मिट्टी व थोड़ा चंदन पाउडर मिलाकर करें। अब इस पाउडर

## ऑल वेल विद एलोवेरा

मुन्ना कुमार शर्मा

में एलोवेरा जेल मिलाकर पेस्ट बनाएँ व चेहरे पर लगाएँ। इस पैक के इस्तेमाल से मुंहासे सूख जाएँगे व स्किन साफ नजर आएगी।

❖ बढ़ती उम्र के निशानों को रोकने



के लिए तीन-चार बादाम को रात भर के लिए भिगो दें और सुबह उन्हें दरदरा पीस लें। अब इस पेस्ट में एक बड़ा चम्मच केओलीन, एलोवेरा एक्सट्रैक्ट व दूध मिलाकर पेस्ट बनाएँ और अपने चेहरे पर लगाएँ। एक मिनट तक इसे हल्के हाथों से रगड़ें और फिर कुछ देर के लिए छोड़ दें। सूखने के बाद गुनगुने पानी से चेहरा धो लें।

❖ कई बार डायरेक्ट पौधे से एलोवेरा जेल लेकर लगाने से कुछ लोगों को एलर्जी होने का चांस होता है। अगर डायरेक्ट पौधे से जेल निकाल रहे हैं

तो एलोवेरा लीफ को तिरछा काट लें। काटने के पश्चात पीले रंग का लिक्विड बाहर निकलने लगेगा। लिक्विड निकालने के बाद आप जेल का प्रयोग कर सकते हैं।

❖ प्रेग्नेंसी के दौरान या फिर वजन गिरने या बढ़ने की वजह से बॉडी पर आए स्ट्रेच मार्क्स हमारे कॉन्फिडेंस को लूज कर देते हैं। एलोवेरा जेल इन स्ट्रेच मार्क्स को छिपाने में बहुत हद तक मदद करता है।

❖ एलोवेरा में शामिल मॉश्चराइजिंग एलीमेंट से कोशिकाओं को ऑक्सीजन प्राप्त होती है, जिसकी मदद से डेड स्किन सेल्स मुलायम होकर आसानी से बाहर निकल जाते हैं। एलोवेरा बालों से डैंड्रफ खत्म करता है इसे कंडीशनर में मिलाकर लगाने से बालों की जड़ें मजबूत होती हैं और बाल चमकदार नजर आते हैं।

❖ एलोवेरा जूस सुबह-शाम पीने से फैंट घटता है। इससे मोटापा कम होता है और शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है।

## म्यांमार की मस्जिद में बौद्धों ने की तोड़फोड़

मध्य म्यांमार में पड़ोसियों के बीच उपजे एक विवाद ने सांप्रदायिक हिंसा का शकल ले लिया। बौद्धों ने एक मस्जिद में तोड़फोड़ की। इसके चलते मुस्लिमों को रात भर एक पुलिस स्टेशन में शरण लेनी पड़ी। गौरतलब है कि पूरा म्यांमार वर्ष 2012 में मुस्लिम विरोधी हिंसा की चपेट में रहा। इसमें बड़ी संख्या में लोगों की जानें गई थी। अब इस तरह के दोबारा हालत आंग सान सू की नई सरकार के लिए गंभीर चुनौती खड़ी कर सकती है। अधिकारियों ने बताया कि बोगो प्रांत के थुए था गाँव में गुरुवार को मुस्लिम स्कूल को लेकर पड़ोसियों के बीच झगड़ा हो गया था। इसके बाद विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। तकरीबन 200 बौद्धों ने मुस्लिम इलाके में जमकर उपद्रव किया।

**प्रतिक्रिया**

- (1) म्यांमार (बर्मा) की जनसंख्या 5-6 करोड़ है।
- (2) 80 प्रतिशत बर्मी, बौद्ध धर्मी और शान्तिप्रिय हैं।
- (3) वहाँ का राजकीय धर्म बौद्ध धर्म है।
- (4) 5 प्रतिशत मुस्लिम हैं लेकिन इनके नाम बर्मी भाषा में ही हैं।
- (5) 2012 में पूरा देश मुस्लिम विरोधी दंगों की चपेट में रहा जबकि तब सैनिक शासन था।
- (6) म्यांमार स्वतंत्र होने के बाद कॉमनवैलथ में शामिल न होने वाला अकेला देश है।
- (7) अपने स्वभाव के अनुसार मुस्लिम संगठित होकर, शस्त्रों से लैस होकर, आक्रामक शेर की भाँति रहते हैं।
- (8) ये छोटी-मोटी बात पर लड़ने और मारने को तैयार हो जाते हैं।
- (9) इनके अनुचित व्यवहार से निपटने के लिए बौद्धों के कई संगठन बने फिर भी मुस्लिम दंगे अब भी करते हैं जिसका मुँहतोड़ उत्तर बौद्धों के संगठन देने लगे हैं। पुलिस मूकदर्शक बनी रहती है।
- (10) सैनिक सरकार ने 3 वर्ष पूर्व कहा था कि सारे मुस्लिम देश छोड़कर अन्यत्र चले जाएँ क्योंकि वे इन्हें पसंद नहीं करते हैं।
- (11) 2015 में सैनिक सरकार ने इनका वोट का अधिकार समाप्त करके इन्हें द्वितीय श्रेणी का नागरिक बना दिया था फिर भी दंगे करते हैं।

आई.डी. गुलाटी, बुलन्दशहर

यो रुमदेशाधिपति शकेश्वरं  
जित्वा गृहीत्वोज्जयिनी महाहवे।  
आनीय सभ्राम्य मुमोचयत्यहो स  
विक्रमार्कः समसहयाचिक्रमः॥  
(ज्योतिर्विदर्भरण-नामक ज्योतिष  
ग्रन्थ २२/१७ से)

यह श्लोक स्पष्टतः यह बता रहा है कि रुमदेशाधिपति रोम देश के स्वामी शकराज (विदेशी राजाओं को तत्कालीन भाषा में एक ही कहते थे, तब शकों के आक्रमण से भारत त्रस्त था) को पराजित करके विक्रमादित्य ने बन्दी बना लिया और उसे उज्जैनी नगर में घुमाकर छोड़ दिया था।

यही वह शौर्य है जो पाश्चात्य देशों के ईसाई वर्चस्व वाले इतिहासकारों को असहज कर देता है और इससे बच निकलने के लिए वे एक ही वाक्य का उपयोग करते हैं—'यह मिथक है' या 'यह सही नहीं है'....। उनके साम्राज्य में पूछे भी कोन कि हमारी सही बातें गलत हैं तो आपकी बातें सही कैसे हैं...? यही कारण है कि आज जो इतिहास हमारे सामने है वह भ्रामक और झूठा होने के साथ-साथ योजनापूर्वक कमजोर किया गया इतिहास है। पाश्चात्य इतिहासकार रोम की इज्जत बचाने और अपने को बहुत बड़ा बताने के लिए चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य के अस्तित्व को भी नकारते हैं। मगर हमारे देश में जो लोक कथाएं, किम्बदन्तियाँ और मौजूदा तत्कालीन साहित्य है वह बताता है कि श्रीराम और श्रीकृष्ण के बाद कोई सबसे लोकप्रिय चरित्र है तो वह सम्राट विक्रमादित्य का है। वे लोक नायक थे। उनके नाम से ही विक्रम सम्वत् हैं। बेताल पच्चीसी और सिंहासन बत्तीसी का यह नायक, भास्कर पुराण में अपने सम्पूर्ण वंश वृक्ष के साथ उपस्थित है। विक्रमादित्य परमार वंश के राजपूत थे। उनका वर्णन सूर्यमल मिश्रण कृत वंश भास्कर में भी है। उनके वंश के कई प्रसिद्ध राजाओं के नाम पर चले आ रहे नगर व क्षेत्र आज भी हमारे बीच उपस्थित हैं...! जैसे देवास, इन्दौर, भोपाल, धार और बुन्देलखण्ड नामों का नामकरण विक्रमादित्य के ही वंशज राजाओं के नाम पर है।

कई इतिहासकार चन्द्रगुप्त द्वितीय को भी विक्रमादित्य सिद्ध करने कि कोशिश करते हैं, यह भी गलत है। क्योंकि शकों के आक्रमण कई सौ साल तक चले हैं और उनसे अनेकों भारतीय सम्राटों ने युद्ध किये और उन्हें वापस भी खदेड़ा। बाद के कालखण्ड में किसी एक शक शाखा को चन्द्रगुप्त ने भी पराजित किया था। तब उनका सम्मान विक्रमादित्य के अलंकार से किया गया था। क्योंकि उन्होंने मूल विक्रमादित्य जैसा कार्य कर दिखाया था। मूल या आदि विक्रमादित्य की पदवी तो शकारि और साहसांक थी। वे उज्जैनी के

राजा थे।

विक्रम और शालिवाहन सम्वत्। वर्तमान भारत में दो सम्वत् प्रमुख रूप से प्रचलित हैं, विक्रम सम्वत् और शक-शालिवाहन सम्वत्। दोनों सम्वत्तों का सम्बन्ध शकों की पराजय से है। उज्जैन के पंचार वंशीय राजा विक्रमादित्य ने जब शकों को सिन्ध के बाहर धकेलकर महान विजय प्राप्त की थी, तब उन्हें शकारि की उपाधि धारण करवाई गई थी तथा तब से ही विक्रम सम्वत् का शुभारम्भ हुआ। विक्रमादित्य की मृत्यु के पश्चात शकों के उपद्रव पुनः प्रारम्भ हो गए, तब उन्हीं के प्रपौत्र राजा शालिवाहन ने शकों को पुनः पराजित किया और



इस अवसर पर शालिवाहन सम्वत् प्रारम्भ हुआ, जिसे हमारी केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय सम्वत् माना है, जो कि सौर गणना पर आधारित है।

सम्राट विक्रमादित्य-उज्जैनी के चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य के महान साम्राज्य क्षेत्र में वर्तमान भारत, चीन, नेपाल, भूटान, तिब्बत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, रूस, कजाकिस्तान, अरब क्षेत्र, इराक, इरान, सीरिया, टर्की, म्यांमार, दोनों कोरिया, श्रीलंका इत्यादि क्षेत्र या तो सम्मिलित थे अथवा सन्धिकृत थे। उनका साम्राज्य सुदूर बालि दीप तक पूर्व में और सऊदी अरब तक पश्चिम में था। Sayar-U-Oknu Makhtale-Sultania/Library in Istanbul, Turkey के अनुसार सम्राट विक्रमादित्य ने अरब देशों पर शासन किया है, अनेकों दुर्जेज युद्ध लड़े और सन्धियाँ की। यह सब इसलिए हुआ कि भारत में किसी भी राजा के सामर्थ्य के अनुसार राज्य विस्तार की परम्परा थी, जो अश्वमेध यज्ञ के नाम से जानी जाती थी उनसे पूर्व में भी अनेकों राजाओं के द्वारा यह होता रहा है। राम युग में भी इसका वर्णन मिलता है। कई उदाहरण बताते हैं कि विक्रमादित्य की अन्य राज्यों से सन्धियाँ मात्र कर प्राप्ति तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन राज्यों में समाज सुव्यवस्था, शिक्षा का विस्तार, न्याय और लोक कल्याण कार्यों की प्रमुखता को भी सन्धिकृत किया जाता था। अरब देशों में उनकी कीर्ति इसीलिए है कि उन्होंने वहाँ व्याप्त तत्कालीन अनाचार को समाप्त करवाया था।

वर्तमान ज्ञात इतिहास में विक्रम जितना बड़ा साम्राज्य और इतनी विजय का कोई समसामयिक रिकार्ड सामने नहीं आता है सिवाय ब्रिटेन की विश्व विजय के। सिकन्दर जिसे कथित रूप से विश्वविजेता कहा जाता है, विक्रम के सामने वह बहुत ही

लिखी है। इस पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि जब मैं भारत का इतिहास पढ़ रहा हूँ, तो लगता है कि भारत की पिटाई का इतिहास पढ़ रहा हूँ, भारत के लोग पिटे, मरे, पराजित हुए, यही पढ़ रहा हूँ! इससे मुझे यह भी लगता है कि यह भारत

भारतीय संसद भवन के निर्माण की स्वीकृति मिली!

अर्थात् जिस देश में लगातार हजारों राजाओं का राज्य एक साथ चला हो, उस देश का इतिहास महज चन्द अध्यायों में पूरा हो गया? क्षेत्रफल, जनसंख्या और विगत विशाल अतीत

## विक्रम सम्वत् के प्रवर्तक सम्राट विक्रमादित्य

अरविन्द सिसोदिया

का इतिहास नहीं है। पाक हेमर ने आगे उम्मीद की है कि जब कभी भारत का सही इतिहास लिखा जायेगा, तब भारत के लोगों में, भारत के युवकों में, उसकी गरिमा की एक वारगी (उत्प्रेरणा) आयेगी।

अर्थात् हमारे इतिहास के लेखन में योजनापूर्वक अंग्रेजों ने उसकी यशस्विता को निकाल बाहर किया, उसमें से उसके मर्म को निकाल दिया, उसकी आत्मा को निकाल दिया। महज एक मरे हुए शरीर की तरह मुर्दा कर हमें पारोस दिया गया है। जो कि झूठ का पुलिन्दा मात्र है। भारत अपने इतिहास को सही करे-वस्तुतः अंग्रेजों के द्वारा लिख गया या लिखाया गया इतिहास झूठा है तथा इसका पुनः लेखन होना चाहिए। इसमें हजारों वर्षों का इतिहास छूटा हुआ है तथा कई बात वास्तविकता से मेल नहीं खाती हैं। विश्व के कई देशों ने स्वतन्त्र होने के बाद अपने देश के इतिहास को पुनः लिखवाया है और उसे सही करके व्यवस्थित किया है। भारत को अपना इतिहास भी सही करना चाहिए।

बहुत कम है भारतीय इतिहास-भारत का नई दिल्ली स्थित संसद भवन, विश्व का ख्याति प्राप्त विशाल राजप्रासाद है। जब इसे बनाने की योजना बन रही थी, तब ब्रिटिश सरकार ने एक गुलाम देश में इतने बड़े राज प्रासाद के निर्माण के औचित्य पर प्रश्न खड़ा किया था। इतने विशाल और भव्य निर्माण की आवश्यकता क्या है? तब ब्रिटिश सरकार को बताया गया कि भारत कोई छोटा-मोटा देश नहीं है, यहाँ सैकड़ों बड़ी-बड़ी रियासतें हैं और उनके राजप्रासाद भी बहुत बड़े बड़े तथा विशालतम हैं। उनकी भव्यता और क्षेत्रफल भी असामान्य रूप से विशालतम हैं! उनको नियन्त्रित करने वाला राजप्रासाद कम से कम इतना बड़ा तो होना चाहिए कि वह उनसे श्रेष्ठ न सही तो कम से कम समकक्ष तो हो। इसी तथ्य के आधार पर

के आधार पर यह इतिहास महज राई भर भी नहीं है! न ही ऐतिहासिक तथ्य हैं, न ही स्वर्णिम अध्याय, न ही शौर्य गाथाएं। सब कुछ जो भारत के मस्तक को ऊँचा उठाता हो, वह गायब कर दिया गया या नष्ट कर दिया गया।

इस्लाम के आक्रमण ने लिखित इतिहास जलाये-यह एक सच और निर्विवाद तथ्य है कि इस्लाम ने जन्मते ही विश्वविजय की आन्धी चलाई, उससे एक तरफ यूरोप और दूसरी तरफ पूर्व एशिया गम्भीरतम प्रभावित हुआ, जो भी पुराना लिखा था उसे जलाया गया। बड़े पुस्तकालय नष्ट कर दिए गए। परन्तु जनश्रुतियों में इतिहास का बहुत बड़ा हिस्सा बचा हुआ था। जागा-भाट परम्परा ने भी इतिहास को बचाकर रखा था। मगर इतिहास संकलन में इन पर गौर ही नहीं किया गया।

राजपूताना का इतिहास लिखते हुए कर्नल टाड कहते हैं कि जब से भारत पर महमूद (गजनी) द्वारा आक्रमण होना प्रारम्भ हुआ, तब से मुस्लिम शासकों ने जो निष्ठुरता, धर्मान्धता दिखाई, उसको दृष्टि में रखने पर बिलकुल आश्चर्य नहीं होता कि भारत में इतिहास के ग्रन्थ बच नहीं पाए। इस पर से यह असम्भनीय अनुमान निकालना भी गलत है कि हिन्दू लोग इतिहास लिखना जानते नहीं थे। अन्य विकसित देशों में इतिहास लेखन की प्रवृत्ति प्राचीन काल से पाई जाती थी, तो क्या अति विकसित हिन्दू राष्ट्र में वह नहीं होगी? उन्होंने आगे लिखा है कि जिन्होंने ज्योतिष-गणित आदि श्रम साध्य शास्त्र सूक्ष्मता और परिपूर्णता के सम्यक् अपनाये, वास्तुकला, शिल्प, काव्य गायन आदि कलाओं को जन्म दिया, इतना ही नहीं उन विद्याओं को नियमबद्ध ढांचे में ढालकर उसके शास्त्र सम्मत अध्ययन की पद्धति सामने रखी, उन्हें क्या राजाओं का चरित्र और उनके शासनकाल में घटित प्रसंगों

हाल में राजकपूर के पुत्र व प्रसिद्ध अभिनेता ऋषि कपूर की उस टिप्पणी से कांग्रेसी नेता उद्वेलित हो उठे जिसमें उन्होंने कहा था कि महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थानों को देश भर में नेहरू जी या उनके खानदान के नाम से जोड़ना अनुचित ही नहीं हास्यास्पद भी है। उन्होंने कहा कि देश की हजारों जगहों को नेहरू, राजीव, इन्दिरा आदि नाम देकर समग्र स्मृति पर एक पारिवारिक कब्जे से लगता है कि वंशवाद ने इस देश को बाप का माल समझ रखा है। प्रसिद्ध व्यंग्यकार एवं कार्टूनिस्ट लक्ष्मण के रेखाचित्र में एक राहगीर जब किसी से रास्ता पूछता है तब उसे उत्तर मिला था—‘सामने

भारत की अंतर्राष्ट्रीय छवि साख को भी धूल-धूसरित करती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के आणविक आपूर्ति समूह (न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप) में प्रवेश की संभावनायें यदि आज न्यूनतम या

व्यर्थ ही तिलमिला रहे हैं। नेहरू जी एक शांतिप्रिय नेता की छवि के लिए उतने ही लालायित थे, जितनी तटस्थ देशों या तीसरे विश्व की अगुवाई के लिए अपनी प्रतिष्ठा निर्माण करने में। इंदिरा

करते हैं कि यदि १९६० के इर्द-गिर्द ही भारत ने जॉन एफ. कैनेडी के प्रस्ताव को स्वीकार कर अमेरिका की सहायता व सहयोग से आणविक परीक्षण कर लिया होता तो न तो हमारे देश में चीन या पाकिस्तानी युद्ध होते और न ही हम विश्व का सर्वाधिक सशक्त समूह न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप (एन. एस.जी.) की सदस्यता से वंचित रहते।

श्री रसगोत्रा के अनुसार नेहरू जी की दूसरी सबसे बड़ी भूल कश्मीर मुद्दे को राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद ले जाना था। यह निर्णय असंवैधानिक था क्योंकि राष्ट्रसंघ के चार्टर का अध्याय ६ स्पष्ट कहता है कि जो पक्ष

मजे की बात यह भी है कि पंडित नेहरू ने स्वयं इस गलती को स्वीकार किया था। लार्ड माउंटबैटन द्वारा २५ फरवरी १९४८ को बुलाई गई एक मीटिंग में नेहरू जी ने स्पष्ट माना था कि “भारत सरकार द्वारा उस समय यह विश्वास का निर्णय (एक्ट ऑफ फेथ) था जबकि स्थिति तेजी से खराब हो रही थी और सुरक्षा परिषद में हमें जाना पड़ा था और हमारा विश्वास गलत जगह (मिसलेस्ड) रखा सिद्ध हुआ जिसके परिणाम हमें झेलने ही होंगे। तब सरदार पटेल जो उस मीटिंग में उपस्थित थे निस्पृह होकर कहा—“राष्ट्रसंघ में हमारा पूर्ण विश्वास था पर “सुरक्षा परिषद”



## नेहरू गाँधी के वंशवाद से परे यशोगान के कारण, आज भी देश का दीर्घकालीन अहित

हरिकृष्ण निगम

राजीव भवन से दाएँ राजीव मार्ग पर चले जाओ। थोड़ा बढ़ने पर राजीव चौराहा आएगा, वहाँ से बाएँ राजीव अस्पताल है, उसकी बगल वाली सड़क से कुछ दूर जाने के बाद राजीव स्टेडियम के साथ वह ऑफिस है। स्पष्ट है कि राजीव गाँधी के नाम पर हर सुविधा को स्थापित करने की प्रवृत्ति नेहरू परिवार के कई लोगों के लिए यथावत रही है। सड़क, महामार्ग, उड़ान पुल, विमानपत्तन, बस टर्मिनल, संगठन, भवन या कार्यक्रम सभी नेहरू-गाँधी के नामों ने दशकों से अपहृत कर लिए गए हैं। केन्द्रीय व राज्यों की सैकड़ों राजकीय योजनाएँ अकादमी, सभागार, महात्मा गाँधी, संजय या सोनिया के नाम से जोड़ी जा चुकी हैं। वस्तुतः राष्ट्रीय स्मृति बनाने का यह माडल सोवियत तौर-तरीकों का गुलाम व वामपंथी बौद्धिकता का पुराना आजमाया अस्त्र है। यह एक ऐसा रोग लगा जहाँ स्वतंत्र चिंतन और भारतीय समाज की विरासत को अपदस्थ कर अपने अनुचरों को बढ़ाने व पुरस्कृत करने की प्रवृत्ति थी जो मार्क्सवादियों का ही भारतीय रूप बन गया था।

हाल में पूर्व विदेश सचिव महाराज कृष्ण रसगोत्रा ने अपने प्रकाशित ग्रंथ में नेहरू जी की आदर्शवादी मूर्खता की उड़ानों का चित्रात्मक उल्लेख किया है।

क्षीण होती हुई दिखती हैं जो विकसित देशों का एक ‘इलीट’ क्लब है तो हमारा देश इसके लिए स्वयं उत्तरदायी है। श्री रसगोत्रा ने अपने ग्रंथ में यह सनसनीखेज खुलासा किया है कि साठ के दशक में ही प्रधानमंत्री नेहरू ने अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी का भारत को पूरी तरह से आणविक विस्फोट परीक्षण के लिए सभी सहायता देने का आश्वासन दिया था। चीन ने अपना परीक्षण बहुत बाद में सन १९६४ में किया। श्री रसगोत्रा इस तथ्य से आज तक व्यथित हैं कि यदि नेहरू जी ने अमेरिकी प्रस्ताव स्वीकार कर लिया होता तब १९६२ में हुआ चीनी आक्रमण व पाकिस्तान से हुआ १९६५ का युद्ध स्वतः टल जाता।

क्योंकि भारत उस अणु परीक्षण के बल पर पहला एशियाई देश होता जो जो ऐसा उसी समय कर चुका होता और अब उसे न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप (एन.सी. जी.) में प्रवेश के लिए हाथ पैर मारने व रणनीतिक प्रयास करने के दौर से न गुजरना पड़ता। श्री रसगोत्रा के दावों की विश्वसनीयता पर किसी तरह का संदेह नहीं किया जा सकता क्योंकि भारत के विदेश मंत्रालय या व्हाइट हाउस द्वारा सत्यापित अभिलेख सभी को उपलब्ध हैं। वर्तमान कांग्रेसी नेता इस खुलासे द्वारा

गाँधी के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार अशोक पार्थसारथी भी श्री रसगोत्रा से व्यर्थ ही असहमत हैं क्योंकि वे आज स्वयं यह बात भी स्वीकार कर रहे हैं कि उनके पिता जी. पार्थसारथी के पास (जो नेहरू जी के अलावा इंदिरा गाँधी के भी परामर्शदाता रहे थे) खुद जॉन एफ. कैनेडी का एक हस्तलिखित पत्र नेहरू जी के नाम लिखा देखा था। वस्तुतः यह पत्र संविधान सभा के सदस्य व नेहरू जी की पहली कैबिनेट के सदस्य और वरिष्ठ राजनयिक एन. गोपालस्वामी आयरंगर के उपलब्ध अभिलेखों में था। आज किसी का प्रश्न उठाना और चोर की दाढ़ी की तरह संशय करना व अब प्रकट कर चुप्पी तोड़ना हास्यास्पद है। अब तक पार्थसारथी इतने बड़े खुलासे के सामने आने की प्रतीक्षा क्यों कर रहे थे। आज के कांग्रेसी नेताओं की ओर से यह झूठी या अर्धसत्य से भरी सफाई आपराधिक प्रकृति की है और उन्हें देश की न्याय प्रक्रिया के तहत सर्वोच्च न्यायालय का सामना करना चाहिए। आज देश जानता है कि नेहरू जी ने यही नहीं अनेक राजनीतिक भूलें की थीं। उसी की कड़ी में उपर्युक्त प्रकरण देखा जाना चाहिए।

स्पष्ट है कि पूर्व विदेश सचिव एम.के. रसगोत्रा अत्यन्त विस्तार से इस तथ्य की विवेचना

विवादित सीमावर्ती झगड़ों को राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद में लाता है इसे अध्याय सात के अंतर्गत उठाना अनिवार्य है जो सीमा अतिक्रमण व आक्रमण से जुड़ा हो। यहाँ तक कि तत्कालीन भारत के गवर्नर-जनरल लार्ड माउंटबैटन ने नेहरू जी की घेराबंदी कर उन्हें मजबूर कर दिया था। भारतीय सेना ने पाक सेना कव कबाइलियों को खदेड़ कर मुजफ्फराबाद और अन्य उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र से बाहर कर दिया था। उस समय नेहरू जी का अनपेक्षित दबाव में राष्ट्रसंघ से याचना करना देश के लिए व सैन्य बलों के लिए भी एक अपमानजनक कलंक भी था और एक राजनीतिक भूल भी। सरदार वल्लभ भाई पटेल, गृहमंत्री की हैसियत से इस अंतर्राष्ट्रीय भूल के विरुद्ध थे और बाद तक राष्ट्रसंघ की ओर दौड़ने की गलती को यू.एन. को ‘डिस्पूनाइटेड नेशन’ कहकर भारत का सीमित संघर्ष ही कहना चाहते थे। कश्मीर पर सन १९४७ से लेकर २०१५ तक लगातार दर्जनों पुस्तकें लिखने वाले स्टैनली वोल्फर्ट ने अपनी हाल की २०१५ में प्रकाशित पुस्तक “इंडिया एंड पाकिस्तान: कन्टीन्यूड कन्फ्लिक्ट ऑर कोआपरेशन” में साफ लिखा है कि नेहरू जी शत-प्रतिशत कश्मीर सीमा विवाद के लिए जिम्मेदार थे।

बड़ी ताकतों की राजनीति का ऐसा खेल खेल रही है कि वह विश्वास चकनाचूर होता जा रहा है। पटेल ने खुलकर लार्ड माउंटबैटन पर भी छीटाकशी की थी कि स्वयं गवर्नर जनरल ने भारत को राष्ट्रसंघ में जाने के लिए प्रेरित ही नहीं फुसलाया भी था। माउंटबैटन इस टिप्पणी पर सन्न रह गये थे।

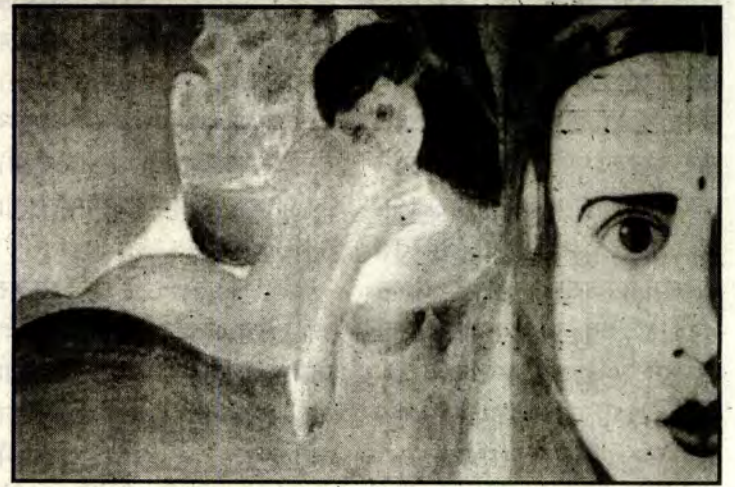
नेहरू जी ने सुरक्षा परिषद में भारत के लिए स्थायी सदस्यता का प्रस्ताव भी उसके बाद ठुकरा दिया था। यह अफवाह उच्चस्तर पर इतनी गहरी थी कि उन्होंने लोकसभा में २७ सितम्बर १९५५ में इसका खंडन भी किया था। जब जे.एन. पारिख नामक सदस्य ने कम अग्रिम सूचना (शार्ट नोटिस) पर प्रश्न किया कि क्या भारत ने अनौपचारिक रूप से सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के प्रस्ताव को अस्वीकार किया है? नेहरू जी का उत्तर था—“औपचारिक या अनौपचारिक रूप से हमें किसी तरह का प्रस्ताव नहीं मिला है और प्रेस में प्रकाशित कुछ ऐसी खबरों का कोई आधार नहीं है।” इसके बाद नेहरू जी के उत्तर में स्थायी सदस्यता की अर्हता आदि पर कुछ पंक्तियाँ यू.एन. चार्टर से उद्धृत की गई थी। मजे की बात है कि राष्ट्र मंत्रालय के नकारने के बाद भी उलटे नेहरू जी चीन

नारी पुरुष की कामनाओं का आधार और सृष्टि की परम्परा का वहन करने वाली शृंखला है। यह जननी होने के कारण परिवार, समाज और अंततः विश्व के केन्द्र में अवस्थित है। इसीलिये किसी समाज की सांस्कृतिक और नैतिक मान्यताएँ बड़ी सीमा तक उस समाज में पुरुष-स्त्री संबंधों को नियंत्रित करने वाले उन नियमों से परिचालित होती हैं और साहित्य है समाज का दर्पण। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सभी युगों और कालों में नारी साहित्य-स्रष्टाओं के आकर्षण का प्रमुख विषय रही है। महाकाव्य, नाटक, कविता, कहानी, उपन्यास, सभी साहित्यिक विधाएँ नारी के दुर्निवार मोह के आलंबन पर ही रची जाती हैं। जिस कृति में नारी की प्रत्यक्ष भूमिका नहीं होती, जैसे प्रकृति काव्य में, वहाँ वह अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में विद्यमान रहती है। साहित्य की प्रत्येक विधा में नारी की परिकल्पना उसके स्रष्टा के जीवन-दर्शन और देश-काल-सापेक्ष सामाजिक अवस्था के अनुरूप नियोजित होती है। साहित्य किसी भी समाज में नारी की स्थिति का बहुत विश्वसनीय अभिलेख है। किन्तु उपन्यास जीवन के सर्वाधिक निकट और यथार्थपरक, विषय की दृष्टि से अत्यन्त व्यापक, और शैली की दृष्टि से सर्वाधिक स्वच्छंद होने के कारण नारी की परिकल्पना का जितना संपूर्ण और सर्वांगीण लेखा प्रस्तुत करने में समर्थ है उतना कोई अन्य साहित्यिक विधा नहीं। इसीलिये "हिन्दी उपन्यास में नारी की परिकल्पना" को प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय बनाया गया है। प्रबंध के कलेवर और अध्ययन की सीमाओं को दृष्टि में रखते हुए कालावधि निर्धारित करना आवश्यक था, अतः इसमें प्रेमचंद से लेकर सन् १९६० तक का उपन्यास-साहित्य लिया गया है।

शोध प्रबंध की सामग्री को सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने के लिए विषयवस्तु का समुचित वर्गीकरण अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। मेरे सम्मुख भी यह दुरुह समस्या थी। उपन्यास का वर्गीकरण आलोचकों ने विभिन्न आधारों पर किया है। कोई विषय-वस्तु को आधार बनाता है, कोई औपन्यासिक तत्वों को और कोई शैली अथवा शिल्प को। मुझे डॉ. इन्द्रनाथ मदान द्वारा प्रतिपादित वर्गीकरण, जिसमें उपन्यासों को उनमें निहित लेखकीय जीवन-दृष्टि के आधार पर श्रेणीबद्ध किया जाता है, सबसे

अधिक वैज्ञानिक प्रतीत हुआ। नारी की परिकल्पना का अध्ययन निश्चय ही समाजशास्त्र से संबद्ध विषय है, अतएव प्रस्तुत प्रबंध के लिए तो यह वर्गीकरण, जिसमें लेखक को व्यक्ति, समाज तथा विश्व संबंधी दृष्टिकोण को सर्वप्रमुख रखा गया है सर्वाधिक उपयुक्त है। इस वर्गीकरण के अनुसार साहित्यकारों को उनके जीवन-दर्शन के अनुरूप चार कोटियों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम कोटि में वे साहित्यकार हैं जो सामाजिक व्यवस्था के संरक्षण, पोषण एवं संवर्धन की भावना से प्रेरित होकर व्यक्ति की सामूहिक चेतना को जागृत करने के लिए साहित्य-सृजन करते हैं। इस कोटि के लेखकों की प्रमुख विशेषता है व्यक्ति-हित की तुलना में समष्टि को प्राथमिकता देना; इन्हें इस प्रबंध में 'सामाजिक उपन्यासकार' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। द्वितीय कोटि में आते हैं व्यक्तिवादी उपन्यासकार। ये लेखक समाज-मंगल की उपेक्षा तो नहीं करते, किन्तु उनका मत है कि व्यक्ति के निर्बाध विकास और व्यक्ति-हित के साधन से ही समाज की पूर्णोन्नति संभव है, अतः समाज के सामूहिक कल्याण पर व्यक्ति के हित को बलि नहीं चढ़ाया जाना चाहिए। ये लेखक व्यक्ति की निजी संवेदनाओं, आशा-आकांक्षाओं और संघर्षों को विशेष महत्त्व देते हैं। दोनों के उद्देश्यों में अंतर नहीं है, किन्तु सामाजिक उपन्यासकार समाज से व्यक्ति की ओर चलते हैं जबकि व्यक्तिवादी उपन्यासकार, व्यक्ति से समाज की ओर। व्यक्तिवादी चेतना ही अधिक आत्केन्द्रित होने पर मनोविश्लेषणवाद का रूप धारण कर लेती है। मनोविश्लेषणवादी चिंतक व्यक्ति और समाज की समस्याओं का मूल मानव-मन के गहन, दुर्गम तलों में उठने वाले घात-प्रतिघातों, ग्रंथियों, कुंठाओं, विकृतियों आदि में, और उनका समाधान मनोविश्लेषण द्वारा मानसिक जटिलताओं को चेतन स्तर पर लाकर उनके परिहार में ढूँढते हैं। उनका मत है कि बाह्य जगत की परिस्थितियाँ मानव के अंतर्जगत द्वारा परिचालित होती हैं, अतः अंतर्जगत की व्याधियों के उपचार से ही समस्याओं का समाधान एवं वास्तविक प्रगति संभव है। मनोविश्लेषणवादी लेखक नारी की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं और मानसिक विकास पर अधिक बल देते हैं। मार्क्सवादी दृष्टिकोण

को बाह्य एवं भौतिक परिस्थितियों द्वारा नियंत्रित मानते हैं। द्वैतात्मक भौतिकवाद के अनुसार मानव समाज पर सबसे बड़ा प्रभाव आर्थिक व्यवस्था का पड़ता है। नारी इसीलिये पुरुष की दासी है कि वह जीवन-निर्वाह के लिये उस पर निर्भर करती है। अतः नारी को वास्तविक स्वातंत्र्य तभी प्राप्त हो सकता है यदि वह स्वावलंबी बने। उपरिलिखित चार चिंतन धाराओं—सामाजिक,



## हिन्दी उपन्यासों में नारी की परिकल्पना

डॉ. महाराज कृष्ण जैन

व्यक्तिवादी, मनोविश्लेषणवादी एवं समाजवादी—के आधार पर ही मैंने नारी की परिकल्पना का अध्ययन करने का उपक्रम किया है। वैसे साहित्य में कोई भी वर्गीकरण कठोरता से लागू नहीं हो सकता और कई रचनाओं में एक से अधिक चिंतनधाराओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। ऐतिहासिक उपन्यासों की नारी की परिकल्पना भी उपर्युक्त चार जीवनदृष्टियों में ही समाहित हो जाती हैं, किन्तु ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रायः नारी पात्रों का एक विशिष्ट और असाधारण स्वरूप उपलब्ध होता है। अतः इन उपन्यासों के गरिमामय नारी व्यक्तित्व के समुचित मूल्यांकन के लिये ऐतिहासिक उपन्यासों को एक पृथक अध्याय में रखना समीचीन प्रतीत हुआ।

शोध का मुख्य विषय प्रेमचंद से लेकर सन् १९६० तक के उपन्यास साहित्य द्वारा परिसीमित हैं। किन्तु विषय को भलीभाँति प्रतिपादित करने के लिए उसकी पृष्ठभूमि का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक प्रतीत हुआ। भारत में नारी-स्वातंत्र्य का आंदोलन मध्यवर्ग के समानांतर विकसित हुआ है। अतः प्रथम अध्याय में शिक्षित मध्यवर्ग के उदय और फलस्वरूप नारी की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की रूपरेखा दी गई है। द्वितीय अध्याय में प्रेमचंद-पूर्व उपन्यास साहित्य में नारी की परिकल्पना का विहंगालोकन है। तदुपरांत चार अध्यायों में पूर्ववर्णित चार औपन्यासिक धाराओं में उपलब्ध नारी की परिकल्पना का विस्तृत विवेचन है। सातवें अध्याय में ऐतिहासिक उपन्यासों के अंतर्गत नारी की परिकल्पना का अध्ययन

है। आठवें और अंतिम अध्याय में संपूर्ण प्रबंध से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं और विषय संबंधी अद्यतन सूचना उपलब्ध करने की दृष्टि से १९६० के उपरांत की कुछ महत्वपूर्ण रचनाओं में नारी की परिकल्पना का परिचय दिया गया है। हिन्दी का उपन्यास साहित्य परिमाण में विपुल है। अतः प्रबंध में प्रत्येक धारा के कुछ प्रमुख लेखकों का ही समावेश करना संभव हो सका है। अधिक प्रसिद्ध लेखकों की सभी अथवा अधिकांश रचनाओं पर विमर्श किया गया है, अन्य लेखकों की प्रतिनिधि रचनाओं से ही संतोष करना पड़ा। प्रबंध के कलेवर की सीमाओं के कारण चाहते हुए भी अनेक लेखकों और रचनाओं को छोड़ देना पड़ा। किसी लेखक की नारी की परिकल्पना, अर्थात् उसकी नारी संबंधी मान्यताओं का अध्ययन, उसकी रचनाओं में नारी पात्रों के चरित्र, स्वयं लेखक की अथवा उसके प्रवक्ता पात्रों की उक्तियाँ, तथा संपूर्ण कथा में निहित मंतव्यों से किया जा सकता है। मैंने आवश्यकतानुसार इन तीनों माध्यमों का अवलंबन लिया है। लेखक की नारी की परिकल्पना का सामान्य आधार खोजने के लिए रचनाओं के विवेचन से पूर्व उस के जीवन-दर्शन की रूपरेखा दी गई है। जिन रचनाओं में केवल चरित्र-चित्रण द्वारा नारी की परिकल्पना को ग्रहण करना कठिन होता वहाँ कथासार भी दे दिया गया है।

मैंने विषय का विवेचन यथासंभव वैज्ञानिक, तटस्थ एवं पूर्वाग्रह-रहित दृष्टिकोण से करने का यत्न किया है। इस उद्देश्य

की पूर्ति में कुछ स्थलों पर सुप्रतिष्ठित आलोचकों से असहमति प्रकट करने अथवा उपन्यासकारों की नारी की परिकल्पना का आलोचनात्मक विश्लेषण करने की धृष्टता मैंने की है। इसके मूल अन्वेषक वाली विनम्र जिज्ञासा ही है, उदंडता नहीं, अतः बुद्धजन इसे अन्यथा न लेंगे। अंत में अपने गुरु और प्रबंध के निरीक्षक, श्रद्धेय डॉ. संसारचन्द्र, एम.ए., पीएच.डी., रीडर, पंजाब विश्वविद्यालय के प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ। यह मात्र औपचारिक 'प्रदर्शन' नहीं है। उनके प्रति मेरे हृदय में जो कृतज्ञता है उसे मैं शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं कर सकता। शारीरिक असमर्थता के कारण मेरे लिये विश्वविद्यालय से विषय स्वीकृत करवाना सर्वथा दुस्साध्य था, यह केवल डॉ. साहब के प्रयत्नों द्वारा ही संभव हो सका। विषय निर्वाचन और शोध कार्य का प्रस्तुतिकरण, संपादन आदि तो उनके निरीक्षण में संपन्न हुआ ही है। मैं आचार्य डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का भी आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे विश्वविद्यालय में उपस्थिति से विशेष छूट दी। डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने विषय निर्वाचन में बहुमूल्य सहायता और कई उपयोगी सुझाव दिये। उनके प्रति भी मेरी कृतज्ञता निवेदित है। चलने-फिरने की असमर्थता के कारण शोध कार्य में अनेक गंभीर कठिनाइयाँ मेरे सम्मुख रहीं। फिर भी मैंने प्रबंध को हर दृष्टि से संपूर्ण बनाने की भरसक चेष्टा की है। मूल्यांकन विद्वज्जन करें। प्रमादवश जो भूलें हो गई हों उनके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ।

**गिलगित, बाल्टिस्तान :** जम्मू-कश्मीर के इस क्षेत्र को पाकिस्तान ने विधिवत अपना प्रांत घोषित कर उसका सीधा शासन अपने हाथ में ले लिया है। यह लगभग ६३ हजार वर्ग किमी. विस्तृत भू-भाग है जिसमें गिलगित लगभग ४२ हजार वर्ग किमी. व बाल्टिस्तान लगभग २० हजार वर्ग किमी. है। यहाँ ५ देशों की सीमाएं भारत से मिलती हैं - पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तजाकिस्तान, चीन एवं तिब्बत। यह मध्य एशिया को दक्षिण एशिया से जोड़ने वाला दुर्गम क्षेत्र है जो सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा जिसके द्वारा पूरे एशिया में प्रभुत्व रखा जा सकता है।

**पाकिस्तान के कब्जे में जम्मू-कश्मीर :** लगभग १० हजार वर्ग किमी. जम्मू क्षेत्र एवं ६ हजार वर्ग किमी कश्मीर क्षेत्र पाकिस्तान के अनाधिकृत कब्जे में है। प्रमुख रूप से यहाँ पंजाबी एवं पहाड़ी भाषी जनसंख्या है। आज यह क्षेत्र पूर्णतया मुस्लिम हो चुका है परन्तु १९४७ में यहां से विस्थापित हुए लगभग १० लाख हिन्दू शरणार्थी जम्मू-कश्मीर एवं भारत के अन्य भागों में रहते हैं।

**चीन अधिगृहित जम्मू-कश्मीर :** लद्दाख के लगभग ३६, ५०० वर्ग किमी. पर १९६२ में चीन ने आक्रमण कर अवैध कब्जा कर लिया, बाद में ५५०० वर्ग किमी. जमीन पाकिस्तान ने भेंट स्वरूप चीन को दे दी।

**भूमिका :** कश्मीर की अर्थ व्यवस्था भारतीय अनुदान (Subsidy) पर निर्भर है। वर्ष २००८ में राज्य को प्रति व्यक्ति केन्द्रीय सहायता ६७५४/- थी, जबकि बिहार जैसे बड़े राज्य को मात्र ८७६/- प्रति व्यक्ति थी। कश्मीर को इसमें से ६० प्रतिशत अनुदान होता है यानि कि मात्र १० प्रतिशत धनराशि वापिस करनी होती है, जबकि शेष राज्यों को ७० प्रतिशत धनराशि वापिस करनी होती है। इस केन्द्रीय सहायता से कश्मीर की खाद्यान्न, शिक्षा आदि में भरपाई होती है। इतनी विपुल भारतीय सुरक्षा व प्रतिकक्षा के बावजूद मौका मिलते ही या मौका ढूँढकर भारत विरोधी प्रदर्शन, आमतौर पर स्पष्ट 'पाकिस्तान समर्थन, पर्यटकों को भारतीय कहकर सम्बोधन, स्वतन्त्रता दिवस को काला दिवस कहकर मनाना, पाकिस्तानी व इस्लामिक स्टेट के झंडे फहराना, भारतीय प्रधानमंत्री की हत्या पर

खुशी का इजहार एवं जनरल जिया उल-हक की वर्तमान दुर्घटना में मृत्यु पर दंगे तथा इन दंगों में अल्पसंख्यकों (हिन्दुओं) पर प्रहार एक अटपटा क्रम लगता है।

दिनांक ८ दिसम्बर १९८६ को केन्द्रीय गृहमन्त्री मुफ्ती मौहम्मद सईद की बेटी राबिया का अपहरण हुआ। जिसका नाटकीय पटाक्षेप मात्र ५ दिन में ५ आतंकवादियों की रिहाई के साथ हुआ, इसके बाद कश्मीर साम्प्रदायिक हो गया। कश्मीर घाटी की मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकों पर घोषणा होने लगी- "अपनी सम्पदा और बेटियां

मानसिकता को बढ़ावा देने वाली व्यवस्थाओं को समाप्त किया जाये ताकि मुस्लिम वोट के भूखे, स्वार्थी, सत्तालोलुप नेता कोई नयी

था और पाकिस्तान के सियालकोट से जम्मू को रेल जोड़ती थी। बिना खून-खराबे के कश्मीर मिल जाये, इसलिए पाकिस्तान ने

के नारे ने कश्मीर के मुसलमानों की राज्य-भक्ति को किनारे कर दिया था।

आपने चित्तौड़ के जौहर के बारे में सुना होगा.....कश्मीर के तो ग्राम-ग्राम में जौहर होने लगे। जम्मू के डोगरा राजपूत, सिख और संघ के स्वयंसेवक जो भी शस्त्र मिला, लेकर मुस्लिम हमलावरों से जूझ गये। बूढ़े हिन्दू और बाल-स्वयंसेवक महिलाओं को लेकर सुरक्षित स्थानों की ओर भाग निकले। जहाँ अकस्मात् घिर गये, भागने का मौका नहीं मिला, तो.....हिन्दुओं ने अपने हाथों अपनी बेटी को, अपनी बहन को, अपनी पत्नी को, अपनी पड़ोसिन हिन्दू

**जम्मू** - इसका क्षेत्रफल कुल ३६,३१५ वर्ग किमी, है जिसमें से आज हमारे पास लगभग २६ हजार वर्ग किमी. है। यहाँ की वर्तमान जनसंख्या का लगभग ६७ प्रतिशत हिन्दू हैं। मुख्य भाषा डोगरी व पहाड़ी है।

**कश्मीर** - लगभग २२ हजार वर्ग किमी. क्षेत्रफल, जिसमें से लगभग १६ हजार वर्ग किमी, ही हमारे पास है। वर्तमान में अधिकांश जनसंख्या मुस्लिम है, लगभग ४ लाख हिन्दू वर्तमान में कश्मीर घाटी में विस्थापित हैं। मुख्यतः कश्मीरी भाषा बोली जाती है, एक तिहाई लोग पंजाबी बोलते हैं।

**लद्दाख** - कुल १,०१,००० वर्ग किमी. क्षेत्रफल, जिसमें से लगभग ५६ हजार वर्ग किमी, भारत के अधिकार में है।

## जम्मू-कश्मीर

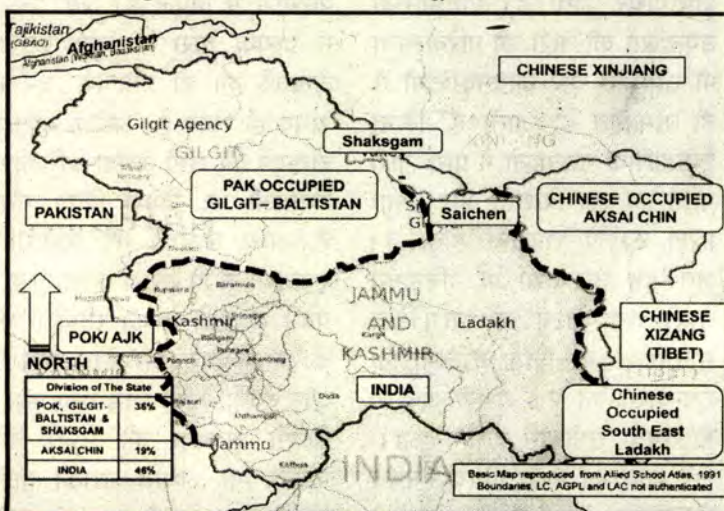
# इतिहास पुर्नलेखन, गलत फतवा और वहाबी जिहाद

सावधान! तेरा राष्ट्र कभी अवनत न हो।

प्रो० ए०पी० सारस्वत

छोड़ जाओ, ये हमारे लिए हैं। कश्मीर इस्लामी मुल्क है।" कश्मीरी हिन्दुओं के आगे दाँ हो

दुविधाजनक, राष्ट्रघाती परिस्थिति देश के सामने उत्पन्न न कर सकें। **जम्मू-कश्मीर समस्या :** कौम



विकल्प थे- "इस्लाम कबूल करो अथवा कश्मीर छोड़कर पलायन को जाओ।" घाटी की परिस्थितियाँ इतनी भयावह हो गई कि ४ लाख से अधिक हिन्दुओं को अपने घर, जमीन-जायदाद व व्यापार आदि छोड़कर भागना पड़ा। वे आज तक भारत के अन्य राज्यों में शरणार्थी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

वास्तव में जम्मू-कश्मीर समस्या की मूल जम्मू-कश्मीर में नहीं है, अपितु नई दिल्ली की केन्द्र सरकार में निहित है। कांग्रेस की नेहरुवादी सोच के स्थान पर भारतीय संविधान की मूल-भावना 'एकजन-एक राष्ट्र' को स्थापित किया जाये तथा अलग संविधान, अलग झंडा, अनुच्छेद-३७० जैसी अलगावादी

(राष्ट्रीयता) मजहब से बनती है, इसीलिये मुसलमान एक अलग कौम है, इसी आधार पर भारत विभाजित हो गया तथा एक अलग राष्ट्र शुद्ध मुस्लिम राष्ट्र 'पाकिस्तान' बन गया। विभाजन उपरान्त कांग्रेस के नेता तो इसका जश्न मनाने में लगे थे और जिन्ना कश्मीर को पाकिस्तान में शामिल करने की योजना बना रहा था।

वायसराय लार्ड माउण्टबैटन, सीमा आयोग के रैंडविलफ और जिन्ना ने मिलकर उत्तर पंजाब के हिन्दू-बहुल जिले गुरुदासपुर के पाकिस्तान में जाने की घोषणा कर दी अब कश्मीर को भारत से जोड़ने का कोई भू-भाग नहीं था। पाकिस्तान को कश्मीर से जोड़ने वाला रावलपिण्डी-श्रीनगर सड़क मार्ग

कश्मीर के जिस शक्कर, तेल, नमक, अन्न की सप्लाई रोक दी। अगस्त का महीना घनघोर वर्षा का था, कश्मीर की जनता को जिहाद के लिए उकसाने के लिए जिन्ना ने पतले रेशमी कपड़े पर पर्चे छापकर हवाई जहाज से कश्मीर में डलवा दिये।

जिन्ना ने फ्रण्टियर में 'जिहाद' का नारा लगाया, कश्मीरी हूँ के मिलने का वादा किया। चित्राल व स्वात के 'वली' को कश्मीर का नवाब बनाने का लालच दिया, ये दोनों खूँ कश्मीर के अधीन थे और कर देते थे। (सरदार पटेल पत्र-व्यवहार पृष्ठ २३४)

**जिहाद के परचों ने कमाल कर दिया।** २० अक्टूबर, १९४७ को ट्रकों में भर, पठान कश्मीर चल दिये। गिलगित का क्षेत्र २ दिन में हाथ से निकल गया। मुजफ्फराबाद के डिप्टी कलेक्टर तथा सारे हिन्दू मारे गये। हिन्दू महिलाएँ और डिप्टी कलेक्टर की पत्नी व २ बेटियाँ कबालियों के हाथ पकड़ी गयीं। राज्य की पुलिस और सेना के मुसलमान अपने हथियारों के साथ दुश्मन से जा मिले। कश्मीर के मुस्लिम पुलिस और सेना के लोग एक-एक गाँव के मकान और रास्तों की जानकारी रखते थे, इसलिए हिन्दू घरों को आग लगाते, महिलाओं का अपहरण करते कबायली हमलावर बढ़ते जा रहे थे। जिहाद

अभागिन को, अपनी माँ को काट फेंका और....'बोले सो निहाल सत श्री अकाल' कहकर जूझ मरे।

सीमा पार से कबायलियों के ट्रक के ट्रक भरे आ रहे थे। लौटते ट्रकों में अपहृत हिन्दू महिलाएँ और लूट का माल भरकर पेशावर भेजा जा रहा था। २० अक्टूबर से कबायली कश्मीर में बढ़ते आ रहे थे, महाराज भारत में विलय-पत्र पर हस्ताक्षर करने को तैयार थे, किन्तु नेहरु अड़ गये कि विलय-पत्र पर तब तक हस्ताक्षर नहीं होंगे जब तक शेख अब्दुल्ला को रिहा नहीं कर दिया जाता। शेख रिहा हुआ और तुरन्त अपने परिवार को ले इन्दौर अपने साले के पास भाग गया। परिवार को सुरक्षित पहुँचा कर दिल्ली में नेहरु के मकान पर रुका और तब तक कश्मीर नहीं गया, जब तक कि पाकिस्तानी भागने न लगे। नेहरु ने चालू युद्ध में घोषणा कर दी जब कश्मीर से पाकिस्तानी सेना चली जायेगी, तब ही मैं जनमत-संग्रह करवाऊँगा, कि जनता पाकिस्तान में जाना चाहती है या भारत में। नेहरु का दूसरा राष्ट्रघाती आदेश यह निकला कि सेना वहीं जाये, जहाँ शेख अब्दुल्ला कहे। घाटी तो दुश्मनों से खाली हो गयी थी, किन्तु जम्मू के हिन्दू शहर पर पाकिस्तानी ट्रट पड़े। यहाँ के हिन्दू और पाकिस्तान से आये हिन्दू-सिख शरणार्थी यहाँ **शेष पृष्ठ 11 पर**

जब अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त हमारे देश में चारों ओर हाहाकार मची हुई थी तो ऐसे में इस वीर भूमि ने अनेक वीर सपूत पैदा किए। जिन्होंने अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने की खातिर अनेकों संघर्षपूर्ण प्रयत्न करते हुए हँसते-हँसते देश की खातिर प्राण न्यौछावर कर दिए।

इन्हीं में तीन पक्के क्रांतिकारी दोस्त थे शहीद—ए—आजम भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव। इन तीनों ने अपने प्रगतिशील और क्रांतिकारी विचारों से भारत के नौजवानों में स्वतंत्रता के प्रति ऐसी दीवानगी पैदा कर दी कि अंग्रेज सरकार को डर लगने लगा था कि कहीं उन्हें यह देश छोड़कर भागना न पड़ जाए।

तीनों ने ब्रिटिश सरकार की नाक में इतना दम कर दिया था जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 23 मार्च 1931 को तीनों को एक साथ फाँसी देने की सजा सुना दी गई। इनकी फाँसी की बात सुनकर लोग इतने भड़क चुके थे कि उन्होंने भारी भीड़ के रूप में उस जेल को घेर लिया था।

अंग्रेज इतने भयभीत थे कि कहीं विद्रोह न हो जाए तो इसी बात को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने एक दिन पहले यानी 23 मार्च

शांति को प्राप्त करने और शक्ति ग्रहण करने का उत्सव है—नवरात्रि। सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके शरणम् त्र्यंबके गौरी, नारायणी नमोस्तुते।

कुँवार और चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा (पड़वा) से लेकर नवमी तक नवरात्रि रहती है। अतः यह समय साधना के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है। जब देवी—देवता भी मानव के साथ—साथ 'राक्षसों' के आतंक से त्रस्त हो गए थे एवं धर्म का नाश होकर अधर्म बढ़ गया, उस समय माँ 'भगवती' का पूजन देवी—देवताओं एवं ऋषि—मुनियों ने किया। अनुष्ठान, जप, यज्ञ, तप से प्रसन्न होकर शक्ति रूपेण माँ दुर्गा दुर्गति नाशिनी प्रकट हुई और राक्षसों का वध करके देवी—देवताओं, ऋषि—मुनियों एवं गौ के साथ—साथ जीव मात्र को शक्ति प्रदान करके 'शांति' प्रदान की तभी से नवरात्रि उत्सव शक्ति एवं शांति हेतु मनाया जा रहा है।

नवरात्रि का व्रत तथा पूजा पाठ एकम से प्रारंभ होकर नवमी

## तीन क्रांतिकारी भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव

1931 की रात को ही भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी दे दी और चोरी—छिपे उनके शवों को जंगल में ले जाकर जला दिया। जब लोगों को इस बात का पता चला तो वे गुस्से में उधर भागे आए। अपनी जान बचाने और

सुखदेव और राजगुरु इन तीनों की शहादत को पूरा संसार सम्मान की नजर से देखता है और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। जहाँ एक तरफ भगत सिंह और सुखदेव कॉलेज के युवा

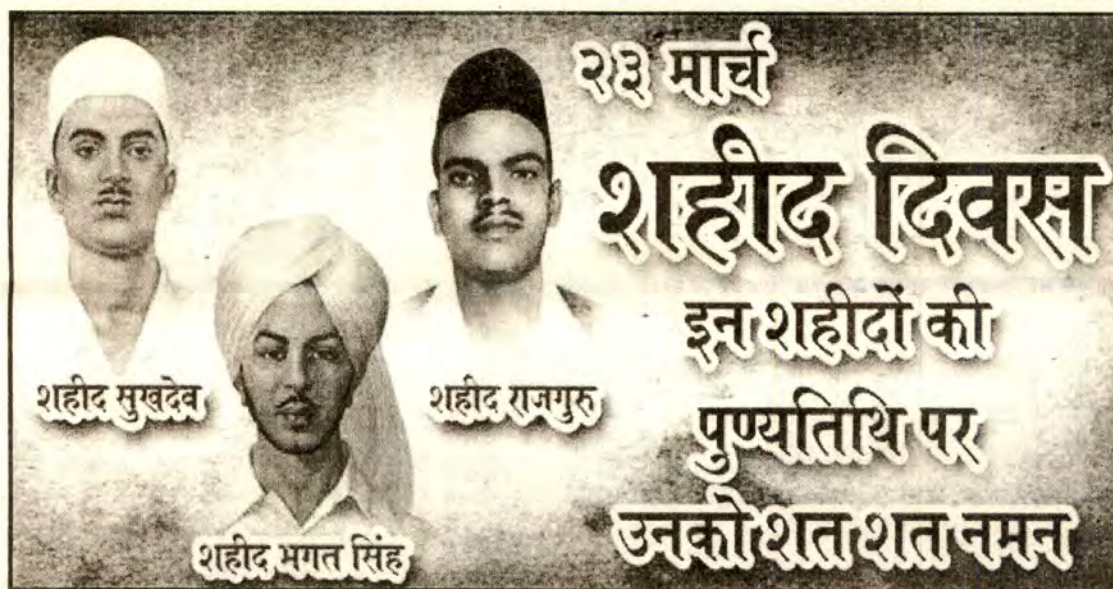
शामिल होकर अपना विशेष स्थान बना लिया था। इस क्रांतिकारी दल का एक ही उद्देश्य था कि सेवा और त्याग की भावना मन में लिए देश पर प्राण न्यौछावर कर सकने वाले नौजवानों को तैयार रखना। लाला लाजपत राय जी

इस काम के लिए चुना गया। कार्यक्रम के अनुसार 2 अप्रैल 1926 को केंद्रीय असेंबली में ऐसी जगह बम फेंके गए थे जहाँ कोई भी मौजूद नहीं था। भगत सिंह चाहते तो वहाँ से भाग सकते लेकिन उन्होंने वहीं अपनी गिरफ्तारी दी। 'इंकलाब—जिंदाबाद' के नारे लगाते हुए उन्होंने कई पर्चे हवा में उछाले थे ताकि लोगों तक उनका संदेश पहुँच सके।

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को आज आजादी के जोशीले दीवानों के रूप में जाना जाता है लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि जेल में लम्बे समय तक रहते हुए उन्होंने कई विषयों पर अध्ययन किया और अनेकों लेख लिखे। उनकी मृत्यु के बाद उनके अनेकों लेख प्रकाशित किए गए। जिनके जरिए वे समाज में एक ज्योति लाना चाहते थे।

वे एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे जहाँ सभी संबंध समानता पर आधारित हों व हरेक को उसकी मेहनत का पूरा हक मिले। अक्टूबर 1926 को भगत सिंह ने जेल से एक पत्र हिन्दुस्तान के युवाओं के नाम लिखा जिसमें उन्हें संदेश दिया गया था कि स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है। जेल में इन तीनों साथियों पर अत्याचार किए गए। लम्बी चली भूख हड़ताल को तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने अमानवीय यातनाएँ दीं लेकिन वे विफल रहे। छोटी आयु में ही देश पर जान कुर्बान करने वाले इन क्रांतिकारी शहीदों को शत—शत प्रणाम।

साभार—नई सदी पॉइन्ट



सबूत मिटाने के लिए अंग्रेजों ने उन वीरों की अधजली लाशों को बड़ी बेरहमी से नदी में फिंकवा दिया। छोटी उम्र में आजादी के दीवाने तीनों युवा अपने देश पर कुर्बान हो गए। आज भी ये तीनों युवा पीढ़ी के आदर्श हैं।

शहीद—ए—आजम भगत सिंह,

स्टूडेंट्स के रूप में भारत को आजाद कराने का सपना पाले थे वहीं दूसरी ओर राजगुरु विद्याध्ययन के साथ कसरत के काफी शौकीन थे और उनका निशाना भी काफी तेज था। वे सब चंद्रशेखर आजाद के विचारों से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने क्रांतिकारी दल में

की मौत में बदला लेने के लिए 19 दिसंबर 1928 को भगत सिंह और राजगुरु ने अंग्रेज अफसर सांडर्स पर गोलियाँ चलाई और वहाँ से भाग निकले।

हालाँकि, वे रक्तपात के पक्ष में नहीं थे लेकिन अंग्रेजों के अत्याचारों और मजदूर विरोधी नीतियों ने उनके भीतर आक्रोश भड़का दिया था। अंग्रेजों को यह जताने के लिए कि अब उनके अत्याचारों से तंग आकर पूरा हिन्दुस्तान जाग उठा है, भगत सिंह ने केंद्रीय असेंबली में बम फेंकने की योजना बनाई। वे यह भी चाहते थे किसी भी तरह का खून—खराबा न हो। इस काम के लिए उनके दल की सर्वसम्मति से भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त को

## दुर्गति नाशिनी दुर्गा

डॉ. शरद दुबे

तक 6 दिन चलता है। इन नौ दिनों तक भगवती दुर्गा देवी या 'वेद माता गायत्री' की साधना, पूजा, अर्चना, पठन—पाठन अथवा 'दुर्गा' सप्तशती का पाठ करना चाहिए। व्रत करने वालों को एक

इस व्रत के आठवें दिन अष्टमी की पूजा सम्पन्न की जाती है। कुछ भक्तों द्वारा नवमी के दिन माँ दुर्गा का पूजन किया जाता है। इस समय स्थिति ऐसी होती है कि जिसमें आत्मा का परमात्मा के



समय ही भोजन करना चाहिए। निराहार रह सकें, तो और भी उत्तम है। यह व्रत समस्त शक्तियों के व्रत में ऊँचा समझा जाता है।

साथ आदान—प्रदान का सिलसिला स्वयमेव चल पड़ता है और इस दिव्य मिलन के फलस्वरूप मिलने वाली उपलब्धियों का लाभ मिलने

लगता है। सिद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष जिनकी सेवा करते हैं तथा जिन्हें देवता सब ओर से घेरे रहते हैं, उन 'दुर्गा देवी' का ध्यान नवरात्रि में करने से सर्व सिद्धि प्राप्त होती है तथा धन—धान्य एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। एक समय की बात है। ब्रह्मा आदि देवताओं ने पुष्प आदि विविध उपचारों से महेश्वरी दुर्गा का पूजन किया। इससे प्रसन्न होकर दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ने कहा—'देवताओं, मैं तुम्हारे पूजन से प्रसन्न हूँ, संतुष्ट हूँ। तुम्हारी जो इच्छा हो माँगो। मैं तुम्हें दुर्लभ से दुर्लभ वस्तु भी प्रदान करूँगी। दुर्गाजी का यह वचन

सुनकर देवता बोले—'देवी, हमारे शत्रु महिषासुर को, जो तीनों लोक के लिए कंटक था, आपने मार डाला। इससे संपूर्ण जगत स्वस्थ एवं निर्भय हो गया। आपकी ही कृपा से हमें पुनः अपने—अपने पद की प्राप्ति हुई है। हमें सब कुछ मिल गया है। अतः हम जगत की रक्षा के लिए आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं। महेश्वरी, कौन सा ऐसा उपाय है, जिससे शीघ्र ही प्रसन्न होकर आप संकट में पड़े हुए जीव की रक्षा करती हैं?' देवताओं की इस प्रकार प्रार्थना करने पर दयामती दुर्गा देवी ने कहा 'देवगण, शेष पृष्ठ 11 पर



# कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं



प्रतिष्ठा में,

श्री प्रकाश जावड़ेकर जी,

माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार

शास्त्री भवन, डाक्टर राजेंद्र प्रसाद मार्ग,

नई दिल्ली-११०००१

## विषय :- संस्कृत भाषा को संरक्षण देने हेतु।

महोदय,

जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता की पुष्टि की गई है। इसलिए मानव संसाधन विकास मंत्री जी से यह अनुरोध है कि जिस प्रकार संस्कृत दसवीं और बारहवीं कक्षाओं में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रमों में संभवतः 30 अंक की होती रही है, उस स्थिति को पुनः लाया जाए। साथ ही संस्कृत भाषा का संरक्षण व संवर्धन किया जाये।

इस फेस्टिवल में इस बार निराधार बातों को लेकर सरकारी सम्मान वापस करने वाले पाखंडी साहित्यकारों को नहीं बुलाया गया, यह भी सराहनीय है, इसलिए आयोजकों को प्रोत्साहन देने के बारे में विचार करने की कृपा करें और सुश्री तस्लीमा नसरीन तथा श्री तारिक फतेह को सरकारी संरक्षण प्रदान किया जाये। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

चन्द्रप्रकाश कौशिक  
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा  
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी  
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

### शेष पृष्ठ 1 का पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत.....

अपील की। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने पाकिस्तान में हिन्दुओं की हत्या व उत्पीड़न की तीव्र निन्दा करते हुए केन्द्र सरकार से मांग की है कि पाकिस्तान की सरकार से तुरन्त बात की जाये।

### शेष पृष्ठ 5 का विक्रम सम्वत् के प्रवर्तक.....

को लिखने का मामूली काम करना नहीं आता होगा।

**हर ओर विक्रमादित्य** - भारतीय और तत्समबन्धी विदेशी इतिहास एवं साहित्य के पृष्ठों पर भारतीय सम्वत्, लोकप्रिय कथाओं, ब्राह्मण, बौद्ध और जैन साहित्य तथा जनश्रुतियों, अभिलेख (एपिग्राफी), मौद्रिक (न्युमीस्टेटिक्स) तथा मालव और शकों की संघर्ष गाथा आदि में उपलब्ध विभिन्न स्रोतों तथा उनमें निहित साक्ष्यों का परीक्षण सिद्ध करता है कि ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी में सम्राट विक्रमादित्य का अस्तित्व था। वे मालव गणराज्य के प्रमुख थे तथा उनकी राजधानी उज्जैनी थी। उन्होंने मालवा को शकों के अधिपत्य से मुक्त करवाया था और इसी स्मृति में चलाया सम्वत् विक्रम सम्वत् कहलाता है जो प्रारम्भ में कृत सम्वत्, सहस्रांक सम्वत् और अन्त में विक्रम सम्वत् के नाम से स्थायी रूप से विख्यात हुआ।

**धर्म युद्ध जैसा विरोध क्यों** - डा. राजबली पाण्डेय जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर थे, उन्होंने एक टिप्पणी में कहा है कि पाश्चात्य इतिहासकार और और उनके भारतीय अनुचर विक्रमादित्य के नाम को सुनकर इस तरह से भड़क उठते हैं कि जैसे कोई धर्मयुद्ध का विषय हो। वे इतने दृढ़प्रतिज्ञ हो जाते हैं कि सत्य के प्रकाशमान तथ्यों को भी देखना और सुनना नहीं चाहते। डा. पाण्डेय ने विक्रमादित्य पर अंग्रेजी में कई खोजपरख लेख लिखे, जिन पर उन्हें राष्ट्रीय स्तर के सम्मान से भी पुरस्कृत किया गया तथा एक अनुसन्धानपरक पुस्तक विक्रमादित्य लिखकर यह साबित किया है कि विक्रमादित्य लिखकर यह साबित किया है कि विक्रमादित्य न केवल उज्जैन के सम्राट थे, अपितु वे एशिया महाद्वीप के एक बड़े भूभाग के विजेता और शासक थे।

**भविष्य पुराण में सम्वत् प्रवर्तक** - भविष्य पुराण में सम्वत् प्रवर्तक विक्रमादित्य और सम्वत् प्रवर्तक शालिवाहन का जो संक्षिप्त वर्णन मिलता है, वह इस प्रकार से है— अग्रिवंश के राजा अमबावती नामक पुरी (कालान्तर में यही स्थान उज्जैन कहलाया) में राज्य करते थे। उनमें एक राजा प्रमर (परमार) हुए, उनके पुत्र महामद ने तीन वर्षों तक, उनके पुत्र देवासि ने भी तीन वर्षों तक, उनके पुत्र देवदूत ने भी तीन वर्षों तक, उनके पुत्र गंधर्वसेन ने पचास वर्षों तक राज्य कर वानप्रस्थ लिया। वन में उनके पुत्र गंधर्वसेन ने पचास वर्षों

तक राज्य कर वानप्रस्थ लिया। वन में उनके पुत्र विक्रमादित्य हुआ उसने सौ वर्षों तक, विक्रमादित्य के पुत्र देवभक्त ने दस वर्षों तक, देव भक्त को शकों ने पराजित कर मार दिया, देवभक्त का पुत्र शालिवाहन हुआ और उसने शकों को फिर से जीत कर सात वर्षों तक राज किया। इसी पुराण में इस वंश के अन्य शासक शालिवर्द्धन, शकहन्ता, सुहोत्र, हविहोत्र, हविहोत्र के पुत्र इन्द्रपाल ने इन्द्रावती के किनारे नया नगर बसाया (जो इन्दौर के नाम से प्रसिद्ध है), माल्यवान ने मलयवती बसाई, शंकादत्त, भौमराज, वत्सराज, भोजराज, शम्भूदत्त, बिन्दुपाल ने बिन्दु खण्ड (बुन्देलखण्ड) का निर्माण किया। उसके वंश में राजपाल, महीनर, सोम वर्मा, काम वर्मा, भूमिपाल, रंगपाल, कल्प सिंह हुआ और उसने कलाप नगर बसाया (कालपी) उसके पुत्र गंगा सिंह कुरुक्षेत्र में निः संतान मर गए।

**800 वर्षों का लुप्त इतिहास** - ब्रिटिश इतिहासकार स्मिथ आदि आन्ध्र राजाओं से लेकर हर्षवर्धन के राज्यकाल तक कोई एतिहासिक सूत्र नहीं देखते। प्रायः चार सौ वर्षों के इतिहास को घोर अन्धकारमय मानते हैं। पर भविष्य पुराण में जो वंश वृक्ष निर्दिष्ट हुआ है, यह उन्हीं चार सौ वर्षों के लुप्त काल खण्ड से सम्बद्ध है। इतिहासकारों को इससे लाभ उठाना चाहिए। भारत में विक्रमादित्य अत्यन्त प्रसिद्ध, न्यायप्रिय, दानी, परोपकारी और सर्वांग सदाचारी राजा हुए हैं। स्कन्ध पुराण और भविष्य पुराण, कथा सप्तशती, बृहत्कथा, सिंहासन बत्तीसी, सरितसागर, पुरुष परीक्षा आदि ग्रन्थों में इनका चरित्र आया है। बून्दी के सुप्रसिद्ध इतिहासकार सूर्यमल्ल मिश्रण कृत वंश भास्कर में परमार वंशीय राजपूतों का सजीव वर्णन मिलता है। इसी में वे लिखते हैं कि परमार वंश में राजा गन्धर्वसेन से भर्तहरि और विक्रमादित्य नामक तेजस्वी पुत्र हुए, जिनमें विक्रमादित्य में धर्मराज युधिष्ठिर के कन्धे से सम्वत् का जूड़ा उतार कर अपने कंधे पर रखा। कलिहाल को अंकित कर समय के सुव्यवस्थित गणितीय विभाजन का सहारा लेकर विक्रम सम्वत् चलाया। वीर सावरकर ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि एक इरानी जनश्रुति है कि ईरान का राजा मित्र डोट्स जो तानाशाह हा अत्याचारी हो गया था, का वध विक्रमादित्य ने किया था और उस महान विजय के कारण विक्रम सम्वत् प्रारम्भ हुआ।

**सम्वत् कौन प्रारम्भ कर सकता है** - यूं तो अनेकानेक सम्वत्तों का जिक्र आता है और हर सम्वत् भारत में चैत्र प्रतिपदा से ही प्रारम्भ होता है। मगर अपने नाम से सम्वत् हर कोई नहीं चला सकता, स्वयं के नाम से सम्वत् चलाने के लिए यह जरूरी है कि उस राजा के राज्य में कोई भी व्यक्ति कर्जदार नहीं हो। इसके लिए राजा अपना कर्ज तो माफ करता ही था ताकी जनता को कर्ज देने वाले साहूकारों का कर्ज भी राजकोष से चुकाकर जनता को वास्तविक कर्ज मुक्ति देता था। अर्थात् सम्वत् नामकरण को भी लोक कल्याण से जोड़ा गया था, ताकि आम जनता का उपकार करने वाला शासक ही अपना सम्वत् चला सके। सुप्रसिद्ध इतिहासकार सूर्यमल्ल मिश्रण की अभिव्यक्ति से तो यही लगता है कि सम्राट धर्मराज युधिष्ठिर के पश्चात् विक्रमादित्य ही वे राजा हुए जिन्होंने जनता का कर्ज अपने कन्धे पर लिया। इसी कारण उनके द्वारा प्रवर्तित सम्वत् सप्रसूतीकार्य हुआ।

**5000 वर्ष पुरानी उज्जैनी** - अवन्तिका के नाम से सुप्रसिद्ध यह नगर श्रीकृष्ण के बाल्यकाल का शिक्षण स्थल रहा है। सन्दीपन आश्रम यही है जिसमें श्रीकृष्ण, बलराम और सुदामा का शिक्षण हुआ था। अर्थात् आज से कम से कम पांच हजार वर्षों से अधिक पुरानी यह नगरी है। दूसरी प्रमुख बात यह है कि अग्रिवंश के परमार राजाओं की एक शाखा का चन्द्र प्रद्योत नामक सम्राट ईस्वी सन के 600 वर्ष पूर्व सत्तारूढ़ हुआ अर्थात् लगभग 2600 वर्ष पूर्व और उसके वंशजों ने तीसरी शताब्दी तक राज किया। इसका अर्थ यह हुआ कि 600 वर्षों तक परमार राजाओं का मालवा पर शासन रहा। तीसरी बात यह है कि काब्रन डेटिंग पद्धति से उज्जैन नगर की आयु ईस्वी सन से 2000 वर्ष पुरानी सिद्ध हुई है। इसका अर्थ हुआ कि उज्जैन नगर का अस्तित्व कम से कम 5000 वर्ष पूर्व का है। इन सभी बातों से साबित होता है कि विक्रमादित्य पर सन्देह गलत है।

**नवरत्न** - सम्राट विक्रमादित्य की राज सभा में नवरत्न थे। ये नौ व्यक्ति तत्कालीन विषय विशेषज्ञ थे। इनमें संस्कृत काव्य और नाटकों के लिए विश्व प्रसिद्ध कालिदास, शब्दकोष (डिक्शनरी) के निर्माता अमर सिंह, ज्योतिष में सूर्य सिद्धान्त के प्रणेता तथा उस युग के प्रमुख ज्योतिष में सूर्य सिद्धान्त के प्रणेता तथा उस युग के प्रमुख ज्योतिषी वराह मिहिर थे, जिन्होंने विक्रमादित्य की बेटी की मौत की भविष्यवाणी की थी। इन नवरत्नों में आयुर्वेद के महान वैद्य धन्वतरि, घटकर्पकर, महान कूटनीतिज्ञ वररुचि, बेताल भट्ट, संकु और क्षपणक जैसी द्विविध विभूतियाँ थी। बाद में अनेक राजाओं ने इसका अनुसरण कर विक्रमादित्य पदवी धारण की एवं नवरत्नों को राजसभा में स्थान दिया। इसी वंश के राजा भोज से लेकर अकबर तक की राजसभा में नवरत्नों का जिक्र है।

बेतालभट्ट एक धर्माचार्य थे। माना जाता है कि उन्होंने विक्रमादित्य को सोलह छन्दों की रचना नीति प्रदीप (Niti-prad+pa सचमुच का दीया) का श्रेय दिया है।

**विक्रमार्कस्य आस्थाने नवरत्नानि धन्वन्तरिः क्षपणको मरसिंह शंकू वेताकभट्ट घट कर्पर कालिदासः। ख्यातो वराह मिहिरो नृपतेस्सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य।।**

## शेष पृष्ठ 9 का दुर्गति नाशिनी दुर्गा...

सुनो! यह रहस्य अत्यंत गोपनीय है। मेरे बत्तीस नामों की माला, सब प्रकार की विपत्तियों का विनाश करने वाली है। तीनों लोकों में इसके समान दूसरी कोई स्तुति नहीं है। इसे बतलाती हूँ— १. दुर्गा, २. दुर्गतिशमनी, ३. दुर्गापद्मिनिवारिणी, ४. दुर्गमच्छेदिनी, ५. दुर्गसाधिनी, ६. दुर्गनाशिनी, ७. दुर्गतोद्धारिणी, ८. दुर्गनिहन्त्री, ९. दुर्गमापहा, १०. दुर्गमज्ञानदा, ११. दुर्गदैत्यलोकदवानला, १२. दुर्गमा, १३. दुर्गमालोका, १४. दुर्गमात्मस्वरूपिणी, १५. दुर्गमार्गप्रदा, १६. दुर्गमविद्या, १७. दुर्गमाश्रिता, १८. दुर्गमज्ञान संस्थाना, १९. दुर्गमध्यानभासिनी, २०. दुर्गमोहा, २१. दुर्गमगा, २२. दुर्गमार्थस्वरूपिणी, २३. दुर्गमासुरसंहन्त्री, २४. दुर्गमायुधधारिणी, २५. दुर्गमांगी, २६. दुर्गमता, २७. दुर्गम्या, २८. दुर्गमेश्वरी, २९. दुर्गभीमा, ३०. दुर्गभामा, ३१. दुर्गभा तथा ३२. दुर्गदारिणी।

जो मनुष्य माँ दुर्गाजी की इस नाम माला का पाठ करता है, वह सब प्रकार के भय से मुक्त हो जाता है। नवरात्रि में नौ दिन नियमित रूप से सिद्ध अग्नि में मधुमिश्रित सफेद तिलों से इन नामों द्वारा हवन करने से मनुष्य सब विपत्तियों से छूट जाता है।

## शेष पृष्ठ 6 का नेहरू गाँधी के वंशवाद से परे.....

की सदस्यता की वैधता पर दबाव डालते रहे और चीन की फारमोसा (अब तैवान) की च्यांग काई-शेक की स्वतंत्र सरकार होने के बाद भी उसके दावे का समर्थन करते रहे थे। नेहरू जी के जिद्दी रुख के बावजूद चीन की पूर्ण स्थायी सदस्यता १९७१ में ही हेनरी फिसिंगर के प्रयत्नों द्वारा मिल सकी थी। प्रश्न उठता है कि आखिर नेहरू जी ने आम सहमति के बिना ऐसा सब क्यों किया जो देश के हित में नहीं था। संभावित उत्तर यह था कि वे एक विशाल स्तम्भ की तरह विश्व के क्षितिज पर उभरना चाहते थे व शान्ति के एक मसीहा के रूप में भारतीय रंगमंच पर आना चाहते थे। उन्हें लगा कि भारत व उनकी अपनी दृष्टि चीन के सहयोग पर निर्भर रही थी। वे कल्पना जगत की एक रूमानी दुनिया में रहते थे। जब चीन ने अचानक हमला किया और भारत की अपमानजनक पराजय हुई वे वैश्विक सरकार, राष्ट्रसंघ आदि की शक्ति की बात करते रहे थे। सितम्बर १९६४ में वे राष्ट्रसंघ गए थे और उनकी आदर्शवादी उड़ान तभी उसे दूसरी ओर विश्व सरकार का बीज मान रही थी। यह विडम्बना है कि आदर्शवादी नेहरू जी के अपने स्वयं के अहंकार को घातक चोट पहुँचाने के बाद जब उनकी मृत्यु हुई थी तब उनके स्वप्न ध्वस्त हो चुके थे जिनसे कांग्रेस बाद तक उबर न सकी थी। (शेष अगले अंक में)

## साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

## विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

## हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।  
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

## :- तत्काल ग्राहक बनें :-

## सदस्यता शुल्क

|                  |              |
|------------------|--------------|
| वार्षिक.....     | 150/- रुपये  |
| द्विवार्षिक..... | 300/- रुपये  |
| आजीवन सदस्य..... | 1500/- रुपये |

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

## शेष पृष्ठ 8 का इतिहास पुर्नलेखन, गलत फतवा....

शरण लिये हुए थे। यहाँ के निवासियों ने गुहार लगायी कि हमारी रक्षा के लिए सेना भेजी जाये, किन्तु अब्दुल्ला ने सेना को श्रीनगर में ही रोके रखा और अकेले मीरपुर में २० हजार हिन्दू मारे गये। नेहरू यहीं नहीं रुके, १ जनवरी १९४६ को एकतरफा युद्ध-विराम की घोषणा करके विजयी भारतीय सेना के बढ़ते कदमों पर जजीरें बांध दीं। यदि नेहरू एक सप्ताह और रुक जाते, तो गिलगित को छोड़ सारा पश्चिम कश्मीर मुक्त हो जाता। कश्मीर में भारतीय सैनिकों के आने का एकमात्र साधन था हवाई जहाज। पटेल का आदेश था— सैनिकों के उतरते ही जहाज पठानकोट लौट आये तथा और सैनिकों को लेकर फिर कश्मीर भेजा जाये। जहाज के आने-जाने में मात्र १ घण्टा लगता था, सैनिक ५ मिनट में कूद जाते थे। अब्दुल्ला के आदेश से, जहाज रोके जाने लगे। लौटते जहाज पर कश्मीर के सेब, बादाम, अन्य फल तथा शालें-कम्बल भारत के लिए लादने लगे। पठानकोट में वस्तुओं के उतारने में भी समय लगने लगा। अब जहाज का दूसरा फेरा ३ से ४ घण्टे में लगने लगा। इसी देरी से मीरपुर, कोटली, भिम्बर, देवा, बुराला को भारतीय सेना नहीं बचा सकी और पाकिस्तान का कब्जा हो गया तथा यहाँ के हजारों हिन्दू-सिख मारे गये। प्रधानमंत्री बनते ही शेख अब्दुल्ला हिटलर बन गया। कश्मीर के हिन्दू अधिकारी, बिना उनका कसूर बताये निलम्बित कर जेलों में डाल दिये गये। महाराज ने देशद्रोह के आरोप में शाहमीरी, अदालत खों और धर को नौकरी से निकाल दिया था किन्तु शेख अब्दुल्ला ने महाराज की उपेक्षा कर इन देशद्रोही मुसलमानों को फिर पदों पर बैठा दिया। (शेष अगले अंक में)

## शेष पृष्ठ 2 का दुर्गा सप्तशती के गूढ़ रहस्य....

के लिए। कारोबार में हानि हो रही है, पैसा नहीं रुकता या बेकार के कामों में नष्ट हो जाता है तो यह करें।

१२. द्वादश अध्याय : मान-सम्मान तथा लाभ प्राप्ति के लिए। इज्जत जिंदगी का एक हिस्सा है। यदि इस पर कोई आरोप-प्रत्यारोप करता हो तो यह पाठ करें।

१३. त्रयोदश अध्याय : भक्ति प्राप्ति के लिए। साधना के बाद पूर्ण भक्ति के लिए यह पाठ करें।

दुर्गासप्तशती के पाठ में ध्यान देने योग्य कुछ बातें :

१. दुर्गा सप्तशती के किसी भी चरित्र का आधा पाठ ना करें एवं न कोई वाक्य छोड़ें।
२. पाठ को मन ही मन में करना निषेध माना गया है। अतः मंद स्वर में समान रूप से पाठ करें।

३. पाठ केवल पुस्तक से करें यदि कंठस्थ हो तो बिना पुस्तक के भी कर सकते हैं।
४. पुस्तक को चौकी पर रख कर पाठ करें। हाथ में लेकर पाठ करने से आधा फल प्राप्त होता है।

५. पाठ के समाप्त होने पर बालाओं व ब्राह्मण को भोजन करवाएँ।

नवार्ण मंत्र के विशेष प्रयोग :

१. मारण : ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं रं रं खे खे मारय मारय रं रं शीघ्र भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

२. मोहन : क्लीं क्लीं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं क्लीं क्लीं मोहन कुरु कुरु क्लीं क्लीं स्वाहा।

३. स्तम्भन : ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्रीं जिहवां कीलय कीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशय-विनाशय ह्रीं। ठं ठं स्वाहा।

४. आकर्षण : ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं यं यं शीघ्रमार्कषय आकर्षय स्वाहा।

५. उच्चाटन : ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं फट् उच्चाटन कुरु स्वाहा।

६. वशीकरण : ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं वषट् में वश्य कुरु स्वाहा।

नोट : मंत्र में जहाँ देवदत्त शब्द आया है वहाँ संबंधित व्यक्ति का नाम लेना चाहिए।

## शेष पृष्ठ 1 का दिल्ली पर आतंकी खतरा.....

भीडभाड वाली जगहों और धार्मिक स्थलों पर खास तौर पर कड़ी निगरानी करने के निर्देश दिए गए हैं। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से मांग की है कि पूरे देश से आतंकवाद का सफाया किया जाये। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि केवल बहानेबाजी से कुछ नहीं होगा। आतंकवाद को कुचलना ही होगा।

दिनांक 29 मार्च से 04 अप्रैल 2017 तक

## साप्ताहिक व्रत-पर्व

| पर्व                      | तिथि      | दिन      |
|---------------------------|-----------|----------|
| नवसम्बत्/नवरात्र प्रारम्भ | 28 मार्च  | मंगलवार  |
| झूलेलाल जयंती             | 29 मार्च  | बुधवार   |
| विनायक चतुर्थी            | 31 मार्च  | शुक्रवार |
| दुर्गाष्टमी               | 04 अप्रैल | मंगलवार  |

## यह भी सच है

## जाली मुद्रा का महाजाल

सरकार को आईएसआई के वर्षों पुराने जाली मुद्रा से सम्बंधित षडयंत्रों की विस्तृत जानकारी देश की जनता के सामने रखनी चाहिये। जिससे सामान्य जनता नोटबंदी के कारण जो कष्ट पा रही थी उसे राष्ट्रीय हित में कड़वी दवाई या मीठा जहर समझ कर कंठ में धारण कर सकें। शत्रु देश पाकिस्तान की गुप्तचर एजेंसी आईएसआई पिछले लगभग 25 वर्षों से भी अधिक जाली मुद्रा के माध्यम से हमारी अर्थव्यवस्था को क्षति पहुँचाने के साथ साथ आतंकवादियों की भी आर्थिक सहायता करती आ रही है। जिससे आतंकवादियों के सैकड़ों संगठन अपने हजाराँ स्लीपिंग सेलो द्वारा लाखों देशद्रोहियों को पाल रही है। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के संदर्भ से अक्टूबर 2014 को छपे एक समाचार से यह भी ज्ञात हुआ था कि पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी (आई.एस.आई.) हजारों करोड़ रुपये से अधिक के नकली नोट प्रति वर्ष छाप रही है और इनको 90 प्रतिशत के मूल्य पर बिचौलियों को देती है। आगे इकबाल काना जैसे दाऊद के एजेंट अपने अपने नेटवर्क के माध्यम से 20 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक कमीशन पर ये जाली मुद्रा को देश के विभिन्न भागों में भेजते हैं। भारत में नकली मुद्रा को झोंकने की गतिविधियाँ पड़ोसी देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, श्री लंका के अतिरिक्त दुबई, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम, कंबोडिया आदि से संचालित होती है। वायु व सड़क मार्ग के अतिरिक्त समुद्री मार्गों से भी इन नोटों की पूर्ति हो रही है। भारत-पाक के व्यापार बढ़ाने के लिए रेल व रोड मार्गों के जुड़ने से यह काम और सरल हो गया। उपभोक्ता वस्तुओं जैसे इलेक्ट्रॉनिक सामान व रेडीमेट गारमेंट्स आदि में इस मुद्रा को छिपा कर विभिन्न नगरों में सक्रिय एजेंटों को भेजा जाता है। अनेक अवसरों पर बच्चों व महिलाओं को भी कोरियर के रूप में लगाया जाता है। प.बंगाल का मालदा बांग्लादेश की सीमा से सटा होने के कारण नशीले पदार्थों के साथ साथ नकली मुद्रा का भी एक बड़ा गढ़ बन चुका है। पहले जम्मू-कश्मीर, पंजाब व राजस्थान की सीमाओं पर पाकिस्तान द्वारा नकली मुद्रा की आपूर्ति अधिक होती थी परंतु सरकार की कड़ी जांच पड़ताल होने से वहां की स्थिति में कुछ नियंत्रण हुआ। नेपाल से प.बंगाल व उत्तरप्रदेश की सीमा पर भी यह अवैध कार्य चलाया जाता रहा है। अगर पिछले 25 वर्षों के पुलिस रिकार्ड देखे जायें तो इस काम में आईएसआई ने भारत के अधिकांश पाकिस्तान परस्त मुसलमानों को ही जोड़ा है जो बार बार पकड़े भी गये और छूटने के बाद फिर इन देशद्रोही कार्यों में संलिप्त पाये गये हैं। इसके अतिरिक्त पिछले वर्षों के समाचारों से कुछ निम्न आंकड़े भी मिलते हैं...

☞ 2011-12 में आर.बी.आई ने माना था कि देश में 66 अरब 32 करोड़ के नकली नोट प्रचलन में थे।

☞ सरकारी आँकड़ों के अनुसार ही 2006-2013 के बीच 62 करोड़ रुपये के जाली नोट पकड़े गए थे।

☞ नकली नोटों की छपाई पाकिस्तान की सरकारी प्रेस में होती है। 2010-11 तक 9000 से 9500 करोड़ छापे जबकि 2012-13 तक 3500 से 4000 करोड़ की नकली मुद्रा छपी इनके प्रमाण संभवतः हमारी गुप्तचर एजेंसियों के पास मिल सकते होंगे।

☞ 2006-2011 तक बैंकों में नकली मुद्रा के लगभग चार लाख से अधिक मामले प्रकाश में आये थे। एक अनुमान के अनुसार एक लाख सत्तर हजार करोड़ रुपये तक की नकली मुद्रा है। परंतु आरबीआई ने इसको प्रमाणित नहीं माना है।

☞ वित्त राज्य मंत्री जयन्त सिन्हा ने 5 अगस्त 2015 को एक बयान में बताया था कि 2012 से 2014 तक तीन वर्षों में कुल 936.83 करोड़ के मूल्य वाले नकली नोट पकड़े गये।

उपरोक्त के अतिरिक्त भारतीय सुरक्षा एजेंसियों द्वारा जाली मुद्रा पर सितंबर 2014 में एक विस्तृत डोजियर भी तैयार किया था, जिसके अनुसार आई एस आई उन्ही प्रिंटिंग प्रेस में भारतीय नकली नोट छपवा रही है जहां पाकिस्तान के अपने नोट छपते हैं। इसीलिये इंक व पेपर लगभग समान होने के कारण वहां छपे 500 व 1000 के नकली नोट और हमारे छपे हुए नोटों में अधिक समानता होने के कारण वर्ष 2005 से पहले के नोट जिन पर वर्ष अंकित नहीं था का प्रचलन आरबीआई ने रोका था। इस प्रकार से विभिन्न बिंदुओं पर प्रकाश डाले तो देश में जाली मुद्रा से जुड़े समाचारों का विस्तृत इतिहास है। जिस पर बहुत कुछ लिखे जाने की अभी और आवश्यकता है।

विनोद कुमार सर्वोदय

## कबिरा खड़ा बजार में

नाम से क्या लेना देना,  
काम चाहिए नेता जी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अपनी कार्यशैली है। जानते हैं, कि जनता को कैसे और क्या समझाना है। वह अपने फन के माहिर खिलाडी हैं भी। काम चाहे जैसा भी हो उन्हें नाम बनाना खूब आता है। उन्हें लगा कि अगर सांसद अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में गांवों को गोद लेकर उन्हें आदर्श गांव के रूप में विकसित करने का बीड़ा उठाएं तो यह ग्राम विकास की दिशा में एक नई पहल होगी। ऐसे गांवों के विकास में सांसद विकास निधि की राशि का इस्तेमाल किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने सांसद आदर्श ग्राम की परिकल्पना की और भाजपा शासित राज्यों ने इससे प्रभावित होकर विधायक आदर्श ग्राम की भी योजना बना ली। इन आदर्श ग्रामों की स्थिति में क्या परिवर्तन आया है, यह अलग बात है। सड़कें आज भी वैसी हैं। पानी की समस्या बनी हुई है। बिजली भी कम ही रहती है। विपक्षी पार्टियों के विधायकों का कहना है कि उनके गोद लिए गांवों के विकास के प्रस्तावों को स्वीकृति नहीं मिल रही है। इन गांवों के लिए विधायकों को अलग से कोई निधि नहीं दी गई है। सांसदों को क्षेत्रीय विकास निधि के रूप में सालाना 5 करोड़ और विधायकों को एक करोड़ मिलता है। इस एक करोड़ रूपए में से 25 लाख रूपए मंत्री की अनुशंसा पर खर्च किए जाते हैं। यह निधि काफी कम है क्योंकि उन्हें पूरे क्षेत्र के लोगों की अपेक्षाओं का ख्याल रखना होता है। सांसद आदर्श ग्राम के लिए राशि का अलग से कोई प्रावधान नहीं है। सरकार का ग्राम विकास पर विशेष जोर होता है। यदि वह सांसद, विधायकों के प्रस्तावों को मंजूरी प्राथमिकता के आधार पर दे तो इन गांवों के विकास को गति मिल सकती है। एक आदर्श ग्राम सिर्फ नाम दे देने से आदर्श नहीं बन सकता, उसे आदर्श ग्राम के रूप में विकसित करने के लिए वहां की जरूरतों और स्थितियों के अनुसार विकास की योजना भी बनाई जानी चाहिए। आदर्श ग्राम कहे जा रहे गांव के लोगों में असंतोष कुछ ज्यादा है क्योंकि आदर्श ग्राम कह देने से उनकी अपेक्षाएं बढ़ गई हैं। यह स्थिति राजनैतिक दृष्टि से सक्रिय और प्रभावशाली नेताओं के निर्वाचन क्षेत्रों में भी है। प्रधानमंत्री के कहने पर ग्रामों को गोद लेने के लिए तो होड़ लग गयी थी। उस समय तो लगा था कि बस अब गांवों में शहर बस जायेगा। ग्रामों का विकास हो जायेगा। जहां का राजनैतिक प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कमजोर है, वहां के आदर्श गांवों में विकास का कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ। पूरे देश में आदर्श गांव बनाने की जो सूची बनायी गयी थी, अगर उसकी जांच की जाए तो बदहाली घटने के बजाय बढ़ी है। गांव सड़क संपर्क के मामले में पक्की सड़कों से नहीं जुड़ पायी है। दूसरी बुनियादी सुविधाओं की स्थिति भी आम गांवों से तरह ही है। अगर इन गांवों को आदर्श गांव बनाना है तो इसके लिए सांसदों-विधायकों के लिए लक्ष्य तय कर देना चाहिए। इस लक्ष्य के साथ सरकार को भी यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि ऐसे किसी आदर्श गांव की ग्रामसभा विकास के जो भी निर्णय लेती है, उस पर तत्काल काम शुरू कराया जाएगा। इससे एक जनप्रतिनिधि के रूप में सांसद-विधायक का मान बढ़ेगा और ग्राम विकास की नई अवधारणा को आगे बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। यही नहीं आजादी के समय से जहां देश निरंतर आगे बढ़ रहा है, वहीं तमाम गांवों का विकास थम सा गया है। अगर सभी मिलकर इस विषय पर काम करें तो सारे गांव ही आदर्श हो जाएंगे।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

